संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-20 अंक- 245
पृष्ठ 8
शनिवार
25 मई 2024
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- क्या डरावने सपनों के कारण..

विचार- मोदी मैजिक फेल, लक्ष्य भी ध्वस्त

खेल- इंग्लैंड के पूर्व कप्तान ने किया बड़ा ..

कोरोना काल में गायब हो गए थे कांग्रेस और सपा के लोग : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि जब कोरोना कालखंड में देश परेशान था तब कांग्रेस और सपा के लोग जनता की मदद करने की जगह गायब हो गये थे। खोपार में कुशीनगर लोकसभा सीट से पार्टी प्रत्याशी के पक्ष में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होने कहा ''कोरोना काल के समय यूपी के दो लड़कों में से एक इंग्लैंड तो दूसरा इटली भाग गया था। कांग्रेस और सपा के शासन में गरीब मुसहर भूखों मरता था, तब हम सब सड़क पर उतर कर उनके हक की लड़ाई लड़ते थे। आज पीएम के नेतृत्व में हमने मुसहर जाति के परिवार को एक–एक आवास, जमीन का पट्टा और राशन कार्ड प्रदान किया है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन और जेपी नड्डा के नेतृत्व में भाजपा दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। हमारे लिए देश पहले है। कोरोना कालखंड

में हमारे प्रधानमंत्री ने पार्टी के कार्यकर्ताओं को सेवा ही संगठन का नारा दिया था। फ्री में टेस्ट, फ्री में उपचार और फ्री में वैक्सीन के साथ ही 80 करोड़ जनता को फ्री में राशन दिया देने का कार्य मोदी जी के कार्यकाल में किया गया। वहीं दूसरी तरफ यही राशन सपा और कांग्रेस के समय में सत्ता के दलाल खा जाते थे। बीते 10 साल में देश का सम्मान पूरी दुनिया में बढ़ा है, हमारी सीमाएं सुरक्षित हुई हैं, आतंकवाद और नक्सलवाद नेस्तनाबूद हुआ है। सीएम योगी ने कहा, अब तो जोर से पटाखा भी फट जाए तो पाकिस्तान सफाई देने लगता है। उसे पता है कि भारत को छेड़ना नहीं है, क्योंकि किसी ने छेड़ा तो भारत छोड़ेगा नहीं। मगर इंडी गठबंधन वाले कह रहे हैं कि पाकिस्तान को छेड़ो मत, ऐसे लोगों को भारत पर बोझ बनने की जगह पाकिस्तान जाकर भीख मांगना चाहिए। जब हमने इंनसेफलाइटिस के खिलाफ अंतिम प्रहार किया था, तब जेपी नड्डा स्वास्थ्य देश के स्वास्थ्य मंत्री थे और उन्होंने कहा था कि जितना धन चाहिए उतना लीजिए। कुशीनगर में मेडिकल कॉलेज कभी एक कल्पना थी। आज ये मेडिकल कॉलेज बनकर तैयार होने जा रहा है। यहां एयरपोर्ट भी बन गया है। यहां महात्मा बुद्ध के नाम पर कृषि विश्वविद्यालय का निर्माण होने जा रहा है।

मतदान के आंकड़े वेबसाइट पर डालने की याचिका पर विचार करने से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

नयी दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने लोकसभा चुनाव मतदान के 48 घंटे के बाद प्रत्येक मतदान केंद्र पर डाले गए मतों के आंकड़े से संबंधित फॉर्म 17सी को वेबसाइट पर डालने की मांग संबंधी याचिका पर चुनाव आयोग की कड़ी आपत्ति के बाद विचार करने से शुक्रवार को इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति दिपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने एनजीओ एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स के आवेदन को प्रथम दृष्ट्या संदेह और आशंका पर आधारित बताते हुए विचार करने से इनकार किया। पीठ ने याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता दुष्यंत दवे और ए एम सिंघवी से कहा, "हम योग्यता के आधार पर कुछ नहीं कह रहे...लेकिन इस समय आपके पास कोई अच्छा मामला नहीं है।"

पांच चरण में मोदी 310 सीट प्राप्त कर चुके हैं, लालू-राहुल का हो गया है सूपड़ा साफ : शाह

आरा, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को दावा किया कि पांच चरण के मतदान की समाप्ति के बाद श्री नरेंद्र मोदी 310 सीट प्राप्त कर चुके हैं, वहीं लालू–राहुल का सूपड़ा साफ हो गया है। श्री शाह ने आज यहां वीर कुंवर सिंह स्टेडियम में भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री आर. के. सिंह के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में घमंडिया गठबंधन का खाता भी नहीं खुलेगा। अब तक हुए पांच चरण में मोदी जी 310 सीट प्राप्त कर चुके हैं, वहीं लालू–राहुल का सूपड़ा साफ हो चुका है। उन्होंने आरा संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं से श्री आर.के. सिंह को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि आपको मोदी जी ने बना बनाया मंत्री चुनने के लिए भेजा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, ''हमने धारा 370 और नक्सलवाद समाप्त किया। तीसरी बार मोदी जी को पीएम बना दो, छत्तीसगढ़ में भी नक्सलवाद समाप्त कर देंगे।'' उन्होंने कहा कि वोट की लालच में श्री लालू प्रसाद यादव ने जिस पार्टी माले को लड़ाया है, अगर जीत गई तो फिर से नक्सलवाद और गोलियां आएगी।'' उन्होंने रैली में आए लोगों से पूछा, ''नक्सलवाद फैलाने वाले माले को जीतना चाहिए क्या। अपने खेत पर कब्जा चाहते हो, अपहरण की इंड्रस्ट्री चाहते हो, लूट खसोट चाहते हो, अगर आरा में माले आई तो मेरी बात मान लो पीछे–पीछे नक्सलवाद भी आ जाएगा।'' श्री शाह ने कहा, ''यादव समाज मुगालते में है कि श्री लालू प्रसाद यादव, यादवों के हक में काम करेंगे। वे केवल परिवार के हक में काम करते हैं, समाज के हक में नहीं। उन्हें केवल अपनी बेटी को एमपी और अपने बेटों को मंत्री बनाने की चिंता है। यहां तेल पिलावन रैली करने वाले जंगल राज चलाते थे। लालू यादव को पिछड़ों की चिंता होती तो कर्पूरी ठाकुर को सम्मान देते, लेकिन उन्होंने सम्मान नहीं दिया। नरेंद्र मोदी ने जननायक को भारतरत्न देकर अति पिछड़ा वर्ग को सम्मान दिया।''

मालीवाल से मारपीट का मामला: अदालत ने बिभव कुमार को चार दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

नयी दिल्ली, 24 मई (वार्ता) राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की तीस हजारी ने अदालत मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक बिभव कुमार को शुक्रवार को चार दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल से मारपीट के मामले में गिरफ्तार बिभव कुमार की पुलिस हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद पुलिस ने आज उन्हें अदालत में पेश किया। अदालत में सुनाव के दौरान दिल्ली पुलिस ने बिभव कुमार की चार दिन की न्यायिक हिरासत मांगी, जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया और उन्हें 28 मई तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया। उल्लेखनीय है कि पुलिस ने बिभव कुमार को दिल्ली पुलिस ने सुश्री मालीवाल से मारपीट मामले में 18 मई को दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास से गिरफ्तार किया था। इस मामले में आरोपी बिभव कुमार ने जांच के दौरान जब्त किए गए डीवीआर की सुरक्षा और उसे रिकॉर्ड पर रखने के लिए एक आवेदन दायर किया है।

अंबाला में बस-ट्रक की टक्कर से सात लोगों की मौत

अंबाला, एजेंसी। हरियाणा में अंबाला–दिल्ली–जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर शुक्रवार तड़के ट्रक और मिनी बस की टक्कर से एक ही परिवार के सात सदस्यों की मौत हो गई तथा 20 से अधिक अन्य घायल हो गये। पुलिस सूत्रों के अनुसार घटना अंबाला कैंट के पास मोहरा गांव में आज तड़के उस समय हुई , जब उत्तर प्रदेश से बस में सवार करीब 30 यात्री जम्मू में माता वैष्णो देवी मंदिर जा रहे थे। इसी दौरान ट्रक ने मिनी बस को टक्कर मार दी, जिसमें एक ही परिवार के सात लोगों की मौत हो गयी और 20 से अधिक घायल हो गये।

अग्निपथ योजना में फंसे मोदी ले रहे हैं चुनाव आयोग का सहारा :

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी जिस गलत नीति के कारण फंसते हैं, उससे बचने के लिए वह सहारा ढूंढते हैं और इस बार अग्निवीर योजना में फंसे हैं तो इससे निकलने के लिए वह चुनाव आयोग का सहारा ले रहे हैं। कांग्रेस के पूर्व सैनिक विभाग के प्रमुख कर्नल रोहित चौधरी ने शुक्रवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अग्निपथ योजना गलत है और इससे सेना में भेदभाव हो रहा है। यह योजना देश, सेना और युवाओं के लिए गलत है इसलिए कांग्रेस की सरकार बनने पर इसे रद्द किया जाएगा लेकिन श्री मोदी इस योजना के कारण फंस गए हैं और अब वह आयोग का सहारा ले रहे हैं। कर्नल चौधरी ने लिखा, "चुनाव आयोग ने कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिखा है कि चुनाव प्रचार के दौरान

पार्टी के स्टार प्रचारक डिफेंस फोर्सेज की ऑपरेशनल चीजों पर बात न करें। श्री मोदी जब भी फंसते है तो वह कोई ना कोई सहारा ढूंढते हैं। पहले वह डिफेंस फोर्सेज के पीछे जाकर छुपते थे और अब चुनाव आयोग का सहारा ले रहे हैं।" उन्होंने देश की सेना को मजबूत बताते हुए कहा, "हमारी सेनाएं सक्षम हैं, बेहतरीन काम कर रही हैं और देश की सुरक्षा कर रही हैं। लेकिन मोदी सरकार ने अग्निपथ योजना लाकर सेना को कमजोर किया है। हम उस अग्निपथ योजना को चौलेंज कर रहे हैं, जो देश, सेना और सैनिकों के हित में नहीं है। पूर्व सेना प्रमुख ने भी अग्निपथ योजना का अपनी किताब में जिक्र करते हुए लिखा है कि इस अग्निपथ योजना के ऐलान ने तीनों सेनाओं को चौंका दिया था।" कर्नल चौधरी ने कहा, "हमारे देश की सेनाओं ने कई लड़ाईयां लड़ीं है। बीते समय में सेनाओं का आधुनिकीकरण भी हुआ, जहाज खरीदे गए, डिफेंस सेक्टर में काफी काम हुआ और सेनाओं में रेगुलर सैनिक थे। अगर आज मोदी सरकार पैसे बचाने के लिए अग्निपथ योजना लेकर आई है तो सवाल है कि क्या सरकार के पास सेना के लिए पैसे नहीं है।अग्निपथ योजना हमारी सेनाओं पर थोपी गई है और अब सैन्य यूनिटों में समस्याएं बढ़ रही है तो आप सर्वेक्षण का काम करा रहे हैं जबकि ये काम पहले करना चाहिए था।" उन्होंने कहा, "हम देश के युवाओं को यह उम्मीद देना चाहते हैं कि हमारी सरकार बनी तो अग्निपथ योजना रद्द होगी और जो अग्निवीर हैं, उनके स्थाई प्रबंधन का काम होगा। इस योजना ने सेना में भेदभाव पैदा कर दिया है और देश की सुरक्षा को भी कमजोर कर रही है। जब सरकार ये योजना लाई थी तब कहा था कि 4 साल बाद इन अग्निवीरों का कहीं न कहीं प्रबंध किया जाएगा लेकिन अब तक इस बारे में कोई नोटिफिकेशन नहीं आया है।"

उत्तराखंड हाईकोर्ट शिफ्टिंग को लेकर दिये गये आदेश पर सुप्रीम कोट की रोक

नयी दिल्ली/नैनीताल, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को जारी अपने महत्वपूर्ण निर्णय में उत्तराखंड उच्च न्यायालय की शिफ्टिंग को लेकर प्रदेश उच्च न्यायालय की ओर से दिये गये आदेश पर रोक लगा दी है। साथ ही प्रतिवादियों से जवाबी हलफनामा दायर करने को कहा है। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने विगत आठ मई को एक न्यायिक आदेश जारी कर प्रदेश सरकार को हाईकोर्ट शिफ्टिंग के लिये एक महीने के अदंर भूमि की व्यवस्था करने

के आदेश दिये थे। मुख्य न्यायाधीश रितु बाहरी और न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की युगलपीठ ने मुख्य सचिव राधा रतूड़ी को इस मामले में सात जून तक अनुपालन रिपोर्ट सौंपने को कहा था। उत्तराखंड उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन लगातार इस निर्णय का विरोध करती आ रही है। बार एसोसिएशन की ओर से उच्च न्यायालय के आदेश को विशेष अपील के माध्यम से उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गयी। उच्चतम न्यायालय की अवकाशकालीन पीठ में इस मामले में आज सुनवाई हुई। न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा एवं न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने इस प्रकरण में सुनवाई करते हुए उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगा दी। पीठ ने सभी पक्षकारों से जवाबी हलफनामा दाखिल करने को कहा है। अब इस मामले में ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद विस्तृत सुनवाई होगी। उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन की ओर से न्यायिक आदेश का विरोध किया गया।

यूसीसी कब ला रही सरकार? पीएम मोदी ने दे दिया बड़ा हिंट

मंडी, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कांग्रेस पर मुस्लिम पर्सनल लॉ की आड़ में इस्लामिक कानून शरिया का

समर्थन करने का आरोप लगाया। हिमाचल प्रदेश के मंडी में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए प्रधान मंत्री ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के कार्यान्वयन की वकालत की, जो कानूनों का एक सामान्य सेट है जो सभी धर्मों के प्रथागत कानूनों को समाहित करेगा और विवाह, तलाक, विरासत और रखरखाव जैसे मुद्दों को नियंत्रित करेगा। प्रधानमंत्री ने रैली में कहा कि मोदी ने समान नागरिक संहिता लागू करने का वादा किया है। चाहे कोई भारतीय नागरिक हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या बौद्ध हो, सभी के लिए एक समान नागरिक कानून होना चाहिए। हालांकि, कांग्रेस पार्टी समान नागरिक संहिता का विरोध कर रही है। कांग्रेस मुस्लिम पर्सनल लॉ की आड़ में शरिया कानून का समर्थन करती है।

महबूबा मुफ्ती ने उम्मीदवारों से कहा, उम्मीद है आप मुझे निराश नहीं करेंगे

श्रीनगर, एजेंसी। अनंतनाग–राजौरी लोकसभा क्षेत्र में चुनाव से एक दिन पहले शुक्रवार को पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने अपने मतदाताओं से अपील करते हुए कहा, '' उम्मीद है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे और संसद में आपकी वकालत करने का अवसर प्रदान करेंगे।'' पीडीपी प्रमुख 2015 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से गठबंधन करने के बाद पार्टी की खोई जमीन वापस पाने की पुरजोर कोशिश कर रही हैं। इस निर्वाचन क्षेत्र पर उनका मुकाबला नेशनल कांफ्रेंस के मियां अल्ताफ और 18 अन्य प्रत्याशियों से है। यह चुनाव निर्वाचन क्षेत्र के विवादित परिसीमन के बाद हो रहा है। यहां पर शनिवार को मतदान होगा।

ध्यान रहे - पहले जलपान फिर मतदान

आप सभी क्षेत्रवासियों से अपील है कि मतदान अवश्य करें
और भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करें

उमेश श्रीवास्तव
सम्पादक
सहर समता

अरविन्द पाण्डेय
प्रबन्ध सम्पादक
सहर समता

निवेदक - सहर समता समूह

आजम खान, पत्नी और बेटे को हाईकोर्ट से जमानत

बेटे के फर्जी सर्टिफिकेट में आजम की सजा पर भी रोक, जेल से बाहर नहीं आ पाएंगे

प्रयागराज। सपा नेता आजम खान, उनकी पत्नी तंजीन फातिमा और बेटे अब्दुल्ला आजम को हाईकोर्ट से जमानत मिल गई। शुक्रवार को बेटे के फर्जी प्रमाण पत्र मामले में हाईकोर्ट ने यह फैसला सुनाया है। तीनों इस वक्त अलग–अलग जेल में बंद है। बेटे अब्दुल्ला के दो बर्थ सर्टिफिकेट मामले में 7 महीने पहले 18 अक्टूबर 2023 को रामपुर की स्पेशल एमपी/एमएलए कोर्ट ने आजम, तंजीन फातिमा और अब्दुल्ला को 7–7 साल की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट ने आजम की 7 साल की सजा पर भी रोक लगा दी, जबकि तंजीन फातिमा और अब्दुल्ला की सजा पर कोर्ट ने रोक नहीं लगाई। 14 मई को हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी होने के बाद जस्टिस संजय सिंह की सिंगल बेंच ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। हाईकोर्ट के वकील शरद शर्मा ने बताया कि आजम अभी जेल में रहेंगे, क्योंकि हेटस्पीच मामले में भी उन्हें 7 साल की सजा हुई है। बेटा अब्दुल्ला भी एक अन्य मामले में आरोपी है। ऐसे में सिर्फ तंजीन ही जेल से बाहर आएंगी।

हाईकोर्ट में आजम परिवार ने दाखिल की थी रिवीजन याचिका

आजम खान, तंजीन और अब्दुल्ला ने एमपी/एमएलए कोर्ट की सजा के खिलाफ रामपुर सेशन कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। सेशन कोर्ट में याचिका खारिज होने के बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में क्रिमिनल रिवीजन याचिका दाखिल की थी। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने राज्य सरकार को अपना पक्ष रखने के लिए कहा था। बहस पूरी होने के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। आजम खान अभी सीतापुर जेल में बंद हैं, जबकि तंजीन रामपुर और अब्दुल्ला हरदोई जेल में बंद हैं। राज्य सरकार ने सजा के ऐलान के बाद ही आजम और बेटे को रामपुर से अलग–अलग जेल में शिफ्ट कर दिया था। पूरे परिवार को सजा सुनाए जाने के बाद आजम ने कहा था– इंसाफ और फैसले में फर्क होता है।

चुनाव लड़ने के लिए बेटे का बनवाया था फर्जी बर्थ सर्टिफिकेट

आजम के बड़े बेटे अब्दुल्ला ने दो बर्थ सर्टिफिकेट बनवाए थे। एक में उनकी उम्र 1993 थी, जबकि दूसरे में उम्र 1990 थी। रामपुर से भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने 2019 में रामपुर के गंज थाने में दो जन्म प्रमाणपत्र होने का मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने आईपीसी की धारा 193, 420, 467, 468, 471 के तहत एफआईआर दर्ज की थी। इसमें आजम और तंजीन को भी आरोपी बनाया था। जांच में पता चला कि बेटे अब्दुल्ला को आजम विधायक का चुनाव लड़ाना चाहते थे। इसलिए, उसकी उम्र 3 साल बढ़ाकर फर्जी सर्टिफिकेट बनवाया। सियासत के शिखर पर चल रहे आजम के परिवार पर राजनीतिक हमला साल 2017 से शुरू हुआ। जब पहली बार उनके बेटे के खिलाफ स्वार विधानसभा सीट से चुनाव जीतने के बाद उम्र के गलत दस्तावेज लगाने का आरोप लगा था। 2017 के चुनाव में आजम के बेटे अब्दुल्ला आजम स्वार सीट से सपा के विधायक चुने गए थे। अब्दुल्ला के सामने बीएसपी से चुनाव लड़े नवाब काजिम अली खान ने नॉमिनेशन के समय अब्दुल्ला की उम्र 25 साल से कम होने का आरोप लगाया। जांच में आया कि अब्दुल्ला आजम ने फर्जी आयु प्रमाण पत्र पर चुनाव लड़ा था और वह नामांकन के समय 25 साल के नहीं थे। इसके बाद अब्दुल्ला का निर्वाचन रद्द कर दिया गया। उनकी सदस्यता भी चली गई। इस मामले में दर्ज मुकदमे में अब्दुल्ला आजम के साथ उनके पिता आजम और मां तंजीन फातिमा को भी जेल जाना पड़ा। हालांकि, 2022 में हुए विधानसभा चुनाव में स्वार सीट से वह दोबारा जीते थे। इस बार सरकारी कार्य में बाधा डालने के एक मुकदमे में उन्हें फिर सजा हुई और उनकी सदस्यता रद्द हो गई थी।

अब पढ़िए आजम खान के राजनीतिक पतन की कहानी...

उत्तर प्रदेश में आजम खान के सियासी रसूख का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह रामपुर सीट से ही 10 बार विधायक और एक बार सांसद रहे। उनकी पत्नी तंजीन फातिमा भी विधायक बनीं और बेटा अब्दुल्ला आजम दो बार विधायक बने। सपा सरकार में आजम का जलवा किसी ब्ड से कम नहीं था। स्टेट प्लेन उन्हें रामपुर तक सिर्फ ड्रॉप करने के लिए जाया करता था। ऐसा माना जाता था कि प्रदेश की आधी सरकार रामपुर से ही चलती है। आजम के इस जलवे पर साल 2017 से ग्रहण लगना शुरू हो गया।

इन कलक्टर–फलक्टर से मत डरियो, ये तनखैय्ये हैं

2019 में लोकसभा में आजम खान सपा के स्टार प्रचारक के रूप में रामपुर में चुनाव प्रचार कर रहे थे। इसी बीच चुनावी रैली में सुर्खियां बटोरने और अपनी ताकत दिखाने के लिए आजम ने ब्यूरोक्रेसी के खिलाफ एक बड़ा डायलॉग मारा। उन्होंने कहा, ष्इन कलक्टर–फलक्टर से मत डरियो, ये तनखैय्ये हैं। अल्लाह ने चाहा तो चुनाव बाद इन्हीं से जूते साफ कराऊंगा। यही डायलॉग आजम के लिए नासूर बन गया। इस बयानबाजी के बाद से ही आजम और उनके परिवार के खिलाफ मुकदमों का दौर शुरू हो गया। पहले आजम को जेल जाना पड़ा। फिर उनकी पत्नी डॉ. तंजीन फातिमा को भी जेल हुई।

जौहर यूनिवर्सिटी की जमीन से शुरू हुआ था शिकायतों का दौर : जब आजम ने रामपुर के अफसरों से जूते साफ करवाने वाला डायलॉग मारा था, उन दिनों वहां के डीएम आंजनेय कुमार थे। उसी दौरान कुछ किसानों ने जौहर यूनिवर्सिटी में गलत तरीके से जमीन लेने की शिकायत आजम खान के खिलाफ की। डीएम ने उस पर जांच के आदेश दिए और ध्ीरे–धीरे आजम पर करीब 105 मुकदमे दर्ज हो गए।

हाईकोर्ट ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रोफेसर की सेवा समाप्ति को अवैध बताया

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के सहायक अध्यापक डॉ. राघवेन्द्र मिश्र की सेवा समाप्ति आदेश को अवैध करार देते हुए रद कर दिया। हाईकोर्ट ने कहा है कि कार्यकारिणी परिषद ने विहित प्रक्रिया व कानून का पालन नहीं किया। बिना सत्य का पता किए केवल शिकायत पर एक वर्ष प्रोवेशन पीरियड बढ़ाने के बावजूद उससे पहले ही सर्वसम्मति से सेवा से हटा दिया। कोर्ट ने याचिका स्वीकार करते हुए याची को प्रोवेशन पीरियड पूरा करने देने व सहायक प्रोफेसर पद का काम करने देने का विश्वविद्यालय को निर्देश दिया है और कहा है कि याची अपने विरूद्ध चल रहे आपराधिक केस का पूरा विवरण देगा। जिस पर कार्यकारिणी परिषद नियुक्ति कंफर्म करने पर विचार करेगी। यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने कानूनी एवं प्रक्रियात्मक उपबंधो पर विचार करते हुए दिया है।

क्या है पूरा मामला जानिये....

मालूम हो कि याची सहायक प्रोफेसर पद पर चयनित हुआ और कार्यभार ग्रहण किया।उसे एक साल के प्रोवेशन पर नियुक्ति दी गई। आवेदन में याची ने लिखा था कि एक आपराधिक केस लंबित है। छात्र राजनीति के कारण किंतु केस का ब्योरा नहीं दिया। परिषद ने सभी नवनियुक्त सहायक प्रोफेसरों का प्रोवेशन पीरियड एक साल के लिए 8 अगस्त 23 को बढ़ा दिया।

किंतु 15 सितंबर की बैठक में कार्यकारिणी परिषद ने अध्यक्ष की अनुमति से याची व एक अन्य की सेवा समाप्ति का प्रस्ताव पारित किया। एक माह का वेतन देकर हटा दिया गया। जिसकी वैधता को चुनौती दी गई थी।

प्रयागराज में वोटिंग से पहले रिस्पांस टाइम ड्रिल

प्रयागराज। प्रयागराज में 25 मई को मतदान होना है। ऐसे में कमिश्नरेट पुलिस हर स्तर पर अपनी तैयारियों को परख रही है। शांतिपूर्ण चुनाव को लेकर पुलिस ने रिहर्सल भी शुरू कर दिया है। गुरुवार रात मतदान केंद्रों की सुरक्षा के मद्देनजर ड्रिल किया गया। रिस्पांस टाइम ड्रिल के जरिए थाना प्रभारियों की मुस्तैदी परखी गई है। विलंब से पहुंचने वालों को हिदायत दी गई कि सूचना पर कम से कम समय में घटना स्थल पर पहुंचे। लेट लतीफ थानेदार, दरोगाओं को को फटकार मिली कि लापरवाही पर सस्पेंड किया जाएगा। पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने डीसीपी के मार्फत यह ड्रिल कराई। शहर से लेकर गांव तक के थानों को रिस्पांस टाइम चेक किया गया।

करेली, नवाबगंज, फूलपुर थाना प्रभारियों को मिला आदेश

करेली, धूमनगंज, खुल्दाबाद थानों की पुलिस को रात में 11 बजे चेक कर सूचना प्रसारित की गई । उन्हें तत्काल मतदान केंद्र, चौराहे पर पहुंचने का आदेश हुआ। इसी प्रकार गंगा नगर जोन में थाना प्रभारी नवाबगंज को रात्रि 10 बजे तत्काल मतदान केंद्र 141 सरस्वती देवी परमानंद सिंहा इंटर कॉलेज पहुंचने की सूचना दी गई। वह चार मिनट में पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। फूलपुर के संवेदनशील मतदान केंद्र विजय लक्ष्मी इंटर कॉलेज पर रात्रि 09:50 बजे प्रभारी निरीक्षक फूलपुर का रिस्पांस टाइम चेक किया। वह 4.35 मिनट पर मतदान केंद्र पर पहुंचे। फाफामऊ 254 के मतदान केंद्र 96, पंचायत भवन अकारीपुर पर रात्रि लगभग 21:50 बजे पहुंच कर प्रभारी निरीक्षक सोरांव का रिस्पांस टाइम चेक किया गया तो 21:55 बजे पर पहुंचे। सिविल लाइंस थाना प्रभारी 90 सेकेंड में मतदान केंद्र पर पहुंचे। कैंट पुलिस 80 सेकेंड में पहुंची। धूमनगंज पुलिस सेंट विघ्ना स्कूल 3 मिनट में पहुंची। पूरामुफ्ती पुलिस दो मिनट में प्राथमिक विद्यालय बीखा पर पहुंची। इसी तरह यमुनापार के औद्योगिक क्षेत्र, नैनी, बारा आदि थानाक्षेत्रों का रिस्पांस टाइम चेक किया गया।

अतीक की जमीन पर अवैध कब्जा, एसडीएम ने कराई एफआईआर

14 लाख में खरीदी थी 5 करोड़ की जमीन, बेटे के लिए बनवाना चाहता था लॉ फर्म

प्रयागराज। प्रयागराज में माफिया अतीक की जमीन पर कब्जे के मामले में गुरुवार रात सदर एसडीएम अभिषेक सिंह ने एफआईआर दर्ज कराई। सिविल लाइन पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। प्रशासन इस जमीन को कुर्क करने की तैयारी में है। यह जमीन इलाहाबाद हाईकोर्ट के पास है। माफिया ने 5 करोड़ की जमीन महज 14 लाख रुपए में अपने नाम करवाई थी। अतीक इस जमीन पर अपने बड़े बेटे उमर अहमद के लिए लॉ फर्म बनवाना चाहता था। उमेश पाल हत्याकांड के बाद अतीक के IS–227 गैंग पर पुलिस ने सख्ती की। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने भी नामी–बेनामी प्रॉपर्टी की जांच शुरू की। इसी बीच अतीक और अशरफ की हत्या हो गई। इसके बाद माफिया के वकील ने प्रशासन को जानकारी दी कि अतीक की जमीन पर कुछ वकीलों ने कब्जा कर लिया है। 5 मई को प्रशासन ने कार्रवाई शुरू की। प्रयागराज कमिश्नरेट पुलिस ने जांच कर जमीन से कब्जा हटवा दिया। प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) ने जांच की, तो पता चला कि 2006 में अतीक ने एमजी मार्ग सिविल लाइंस के रहने वाले अब्दुल रब से इस जमीन का सौदा 14 लाख में किया था। वर्तमान समय में बिल्डर इस जमीन की कीमत 5 करोड़ तक बता रहे हैं। इसी मामले में सदर एसडीएम अभिषेक सिंह मामले की जांच कर रहे थे। अपनी जांच रिपोर्ट के आधार पर उन्होंने गुरुवार रात एफआईआर दर्ज कराई है।

अतीक के परिवार के पास अब क्या ऑप्शन है ?

परिवार को यह साबित करना होगा कि यह अवैध रूप से अर्जित की गई प्रॉपर्टी नहीं है।

साल 2006 में जमीन की कीमत 57 लाख के करीब थी तो रजिस्ट्री 14 लाख में क्यों कराई?

माफिया ने डरा धमकाकर जमीन तो नहीं खरीदी?

जमीन कुर्क करने के बाद अतीक के परिवार को भेजा जाएगा नोटिस।

जवाब आने और ईमानदारी से जमीन खरीदने की बात साबित करनी होगी।

सरकार के पास क्या ऑप्शन है ?

अपील पर सुनवाई के बाद सरकार को अधिकार होगा कि वह जमीन को सरकारी कार्य में इस्तेमाल कर ले।

सरकार यहां गरीबों के रहने के लिए घर बनवा सकती है। सरकारी अस्पताल या किसी अन्य सरकारी कार्य के लिए ऑफिस का निर्माण कर सकती है।

कोर्ट के पास जमीन है तो न्यायिक कार्य के लिए बिल्डिंग बनवाने में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

अतीक गैंग की 1800 करोड़ की संपत्ति अब तक कुर्क

उमेश पाल हत्याकांड के बाद पुलिस ने अब तक अतीक गैंग की 1800 करोड़ की संपत्ति कुर्क की है। पुलिस ने अतीक–अशरफ और गैंग के सदस्य के मददगारों, फाइनेंसरों की सूची भी तैयार की है। वहीं म्क अतीक की बेनामी संपत्तियों की जांच में लगी हुई है।

तीन ड्रीम प्रोजेक्ट में 40 करोड़ लगाए

अतीक–अशरफ के 3 ड्रीम प्रोजेक्ट शहर में ही हैं। करेली में अलीना सिटी, अहमद सिटी में करोड़ों रुपए खर्च कर प्लाटिंग की गई। इसमें अतीक–अशरफ से जुड़े 17 लोगों ने करोड़ों रुपए इन्वेस्ट किए। पुलिस–ईडी की निगाह में आने के बाद इस प्रोजेक्ट पर जांच चल रही है। धूमनगंज के झलवा में सिटी आवास योजना में करोड़ों रुपए लगे। पुलिस ने इसके दस्तावेज खंगाले और पूछताछ भी की। इस प्रोजेक्ट में अकेले अशरफ और उसके ससुराल वालों के रुपए लगाने की बात सामने आई है।

छठे फेज की 14 सीटों में 6 पर कड़ी फाइट

आजमगढ़ में सपा सेफ, जौनपुर में धनंजय–फैक्टर के बावजूद टफ फाइट, मेनका का गढ़ बचाने पहुंचे वरुण

प्रयागराज/जौनपुर/आजमगढ़। पूर्वांचल में छठे फेज के चुनाव की 14 सीटें हैं। इन पर हवा का रुख देखें, तो 6 सीटों पर भाजपा को इंडी गठबंधन से कड़ी टक्कर मिल रही। 5 सीटों पर भाजपा बढ़त में है। 3 सीटों पर सपा सेफ दिख रही है। ये सीटें हैं, आजमगढ़, मछलीशहर और डुमरियागंज। 2019 में 14 सीटों में 9 पर भाजपा का कब्जा था, सिर्फ 1 सीट आजमगढ़ सपा जीत सकी थी। जबकि बसपा ने 4 सीटें जीती थीं। संतकबीरनगर, बस्ती, सुल्तानपुर और भदोही पर भाजपा का कब्जा था। मगर 2024 के चुनाव में यहां भाजपा को सपा से कड़ी टक्कर मिल रही है। सबसे टफ फाइट आजमगढ़ और जौनपुर सीटों पर दिख रही है। यादव परिवार की परंपरागत सीट आजमगढ़ बचाने का चौलेंज अखिलेश के सामने है। गुड्ड्डू जमाली को एमएलसी बनाकर उन्होंने मुस्लिम वोटर्स को एकजुट कर लिया है। बसपा के कमजोर चुनाव लड़ने की वजह से दलित वोटर्स का बिखराव हो सकता है। 2022 उपचुनाव में भले ही भाजपा ने आजमगढ़ सीट जीत ली थी, मगर मार्जिन सिर्फ 8 हजार का था। गुड्ड्डू जमाली 2.66 लाख वोट पाकर गेमचेंजर साबित हुए थे। अब बदले हुए समीकरण में भाजपा के दिनेश लाल यादव श्निरहुआश् के लिए चुनाव टफ होता दिख रहा है। वहीं जौनपुर सीट पर धनंजय का भाजपा के साथ होने के बावजूद फाइट बनी हुई है। सपा के बाबू सिंह कुशवाहा मुस्लिम–यादव और ओबीसी वोटर्स के बीच मजबूत दिख रहे हैं। भाजपा के कृपाशंकर का चुनाव दरअसल धनंजय सिंह लड़वा रहे हैं। यहां श्रीकला रेड्डी के चुनाव से बाहर होने का सबसे ज्यादा नुकसान बसपा को उठाना पड़ रहा है। जौनपुर में भाजपा और सपा के बीच कड़ी टक्कर है।

मेनका गांधी का चुनाव भी आसान नहीं

मछलीशहर में भाजपा ने सीटिंग सांसद को रिपीट किया है। 2019 के चुनाव में भाजपा के बीपी सरोज सिर्फ 181 वोट से चुनाव जीते थे। सपा ने 3 बार के सांसद तूफानी सरोज की बेटी प्रिया सरोज पर भरोसा जताया। यहां भाजपा के लिए चुनाव आसान नहीं है। मेनका गांधी के लिए आशीष पटेल और संजय निषाद दोनों ही एक्टिव हैं, क्योंकि सुल्तानपुर में निषाद और पटेल वोटर्स निर्णायक हैं। मेनका के लिए भी यह चुनाव आसान नहीं है, इसलिए चुनाव कैंपेन संभालने उनके बेटे वरुण गांधी भी पहुंचे। भदोही में पूर्व मुख्यमंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी के बेटे ललितेश पति त्रिपाठी ए्छ.क्ए गठबंधन से अच्छा चुनाव लड़ रहे हैं। डुमरियागंज सीट से भाजपा के सीटिंग सांसद जगदंबिका पाल को हरिशंकर तिवारी के बेटे भीष्म शंकर तिवारी से कड़ी टक्कर मिल रही है। भीष्म डुमरियागंज से पहली बार चुनाव लड़ रहे हैं। प्रतापगढ़, इलाहाबाद, फूलपुर, श्रावस्ती, लालगंज सीटों पर भाजपा बढ़त में दिख रही है। संतकबीरनगर, बस्ती, अंबेडकरनगर में भाजपा और सपा के बीच तगड़ी फाइट है। छठवें चरण में सबसे ज्यादा नुकसान में बसपा दिख रही है। 2019 में बसपा को जौनपुर, श्रावस्ती, अंबेडकरनगर और लालगंज में जीत मिली थी, मगर 2024 में किसी भी सीट पर बसपा के प्रत्याशी चर्चा में नहीं हैं, वो सिर्फ कोर वोटर्स के भरोसे चुनाव लड़ रहे हैं।

एक्सपर्ट और पब्लिक के इनपुट पर 3 बातें समझ आती हैं...

पूर्वांचल में राजा भैया ने सपा को समर्थन दिया है। इसका श्रावस्ती, भदोही, इलाहाबाद और प्रतापगढ़ के नतीजों पर असर पड़ सकता है। 2019 के चुनाव में 3 सीटें भाजपा, 1 सीट श्रावस्ती बसपा ने जीती थी। बाहुबली धनंजय सिंह भाजपा के लिए जौनपुर और मछलीशहर में चुनाव कैंपेन कर रहे हैं। लेकिन दोनों सीटों पर सपा तगड़ी फाइट कर रही है। यहां जीत–हार का मार्जिन कम रहने वाला है। छठवां चरण बाहुबली और हाई प्रोफाइल सियासी चेहरों का है। मेनका गांधी, कृपाशंकर सिंह, दिनेश लाल यादव निरहुआ, जगदंबिका पाल और धर्मेंद्र यादव के चुनाव पर सबकी निगाहें हैं।

सबसे पहले आजमगढ़ की हवा...

लोग बोले– यहां 60ः चांस सपा के, निरहुआ मुश्किल में

आजमगढ़ में सबसे पहले हमारी मुलाकात श्यामलाल से हुई। चुनाव का सीन कैसा है? इसके जवाब में वह कहते हैं– सपा जीत रही है। यहां मुलायम सिंह ने ही तो काम कराए। पिछड़ा इलाका है हमारा। भाजपा वाले डबल इंजन सरकार बताते हैं, मगर काम तो उन्होंने वही कराए जो सपा के अधूरे छूटे हुए थे। यहां 60–40 का चुनाव है। 60ः चांस सपा के हैं। यहां से थोड़ा आगे बढ़ने पर हमारी मुलाकात वीरेंद्र गुप्ता से हुई। वह कहते हैं– भाजपा और सपा के बीच चुनाव है। ये शहर सपा का गढ़ रहा है, लोग धर्मेंद्र यादव को जानते हैं। निरहुआ यहां कम रहे हैं, थोड़े समय में वो अपनी मजबूत पहचान नहीं बना सके हैं। जो लकीर मुलायम खींच गए हैं, वो कोई और नहीं कर पाएगा। हालांकि, लोग बहुत समझदार हो चुके हैं। कई फैक्टर देखकर ही वोट करते हैं।

क्या आजमगढ़ में वाकई सपा का पलड़ा भारी है?

राजनीतिक विश्लेषक रत्न प्रकाश त्रिपाठी कहते हैं– आजमगढ़ का इलेक्शन जातियों पर होता है। मुस्लिम–यादव सपा को ही वोट करेंगे। अब बाकी जातियों को हिंदू–मुस्लिम में बांट दीजिए। यही फैक्टर है। बाकी रहा डेवलपमेंट का मसला, तो लोगों के लिए वह सेकेंडरी है। फाइट टफ मान सकते हैं, क्योंकि 2022 का उपचुनाव भाजपा सिर्फ 8689 वोट से जीती थी। सपा को भी दिख रहा है कि वह सीट को दोबारा हासिल कर सकती है। इसलिए पूरा यादव कुनबा आजमगढ़ में एक्टिव है। ऐसा नहीं कह सकते है कि निरहुआ के लिए चुनाव आसान है।

क्या भाजपा आजमगढ़ में कमजोर लड़ रही है?

वरिष्ठ पत्रकार सचिन श्रीवास्तव कहते हैं– आजमगढ़ में आखिरी घंटे तक समीकरण बदलते हैं। 2014 में मुलायम सिंह यादव और रमाकांत यादव के बीच अंतिम दिन तक कांटे की टक्कर दिखी थी। आज भले ही धर्मेंद्र यादव बढ़त में दिख रहे हैं, मगर भाजपा भी फाइट में बनी हुई है।

सुल्तानपुर के दरियापुर इलाके में भाजपा सांसद मेनका गांधी रहती हैं, इन्हीं गलियों में उनके प्रतिनिधि रंजीत सिंह के विवादित पोस्टर लगे हुए हैं। उनके साथ पोस्टर में राजेश पांडेय, जोकि नगर विधायक के कामकाज देखते हैं और भाजपा नेता श्याम बहादुर दिख रहे हैं। कार्यकर्ता इन तीनों से मुक्ति दिलाने के लिए कह रहे हैं।

इसी नाराजगी को समझते हुए हम सब्जी मंडी तक पहुंचे। यहां हमारी मुलाकात राजमति सिंह से हुई। राजमति का कहना है– मेनका ही जीतेंगी। इंडिया गठबंधन से चुनौती का दावा करना, अलग बात है। भाजपा ने काम किए, विकास किया। विपक्ष को कोई मुद्दा तो मिल नहीं रहा। क्या गारंटी है कि यह गठबंधन, चुनाव बाद रहेगा। आज लोग भाजपा के साथ खड़े हैं।

मंडी में ठेला लगाने वाले चिंटू सोनकर कहते हैं– हम तो भाजपा के वोटर थे, गरीब आदमी हैं। इस समय दुकान लगा नहीं पा रहे हैं। पुलिस वाले भगा रहे हैं। भाजपा कह रही थी कि गरीबी को हटाएंगे अब वह लोग गरीब को हटा रहे हैं। ऐसे में हम सपा को जिताएंगे। व्यापारी शीलभद्र सिंह बोले– यहां कांटे का मुकाबला है। सपा प्रत्याशी के साथ जातिगत समीकरण है। भाजपा के 10 साल के कार्यकाल की कुछ नाकामियां रहीं। जो काम पूरे नहीं हो पाए, जिस कारण विपक्षी गठबंधन मजबूत दिखाई दे रहा है। मेनका गांधी का पर्सनल व्यवहार बहुत अच्छा रहा। 5 साल लगातार आना और बिना भेदभाव के काम करना, यह उनके लिए प्लस पॉइंट हैं।

प्रयागराज में पार्टी का झंडा उतारने पर विवाद

प्रयागराज ।प्रयागराज में 25 मई को वोटिंग है। चुनावी सरगर्मी, विवाद, दुश्मनी, हंगामे के मामले अब सामने आने लगे है। चुनावी रंजिश बताकर एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप, शिकायतें, एफआईआर का सिलसिला शुरू हो गया है। मतदान से पहले करेली और यमुना नगर के करछना में 2 विवाद सामने आए हैं। हालांकि पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली। पूछताछ हो रही है।

करेली इलाके में ज्यादा हंगामा

शहर के करेली की रहने वाली महिला ने तहरीर दी है कि उनका बेटा और बेटियां गुरुवार रात को घर के बाहर बैठकर चुनावी चर्चा कर रहे थे। वे आपस में बात कर रहे थे कि अबकी बार किसकी सरकार बनेगी। इसी बीच सलीम अपनी पत्नी के साथ गुजर रहा था। वह बाइक रोक कर बेटे और बेटियों को गाली देने लगा और बोला– अबकी बार तुम्हारी सरकार नहीं बनेगी। वह धमकी देकर चला गया। रात में अपने 5 से 6 साथियों के साथ नशे में आया और घर के अंदर घुसकर मारपीट किया और बेटियों के साथ बदसलूकी की। शोर मचाने पर आसपास के लोग पहुंचे तो आरोपी भाग निकले। थाना प्रभारी करेली अमरनाथ ने बताया कि आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

यमुना नगर में भी रिपोर्ट दर्ज

दूसरा मामला करछना का है। यहां भीरपुर घोड़ेडीह गांव में बुधवार रात घर में एक पार्टी का झंडा लगाने पर दूसरी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने पिटाई कर दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर गुरुवार को 4 के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। घोड़ेडीह गांव निवासी विपिन कुमार तिवारी पुत्र कृपा शंकर तिवारी ने अपने घर पर एक पार्टी का झंडा लगाया था। इसे लेकर दूसरी पार्टी के सोनू कोलहा, रवि कोलहा, मोनू और गणेश ने कमेंट किया। आरोपियों ने कहा कि तुम्हारी पार्टी वैसे भी हार रही है। झंडा लगाने का कोई मतलब नहीं है। साथ ही घर पर लगे झंडे को उतरवाने के लिए कहा। विपिन का आरोप है कि उसने झंडा उतारने से मना किया तो उसे पीट दिया गया। मारपीट की सूचना पर करछना पुलिस पहुंची। पुलिस ने विपिन की तहरीर पर 4 के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। डीसीपी यमुना नगर ने बताया कि झंडा लगाने को लेकर विवाद की बात सामने आई थी। तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर जांच की जा रही है।

संक्षिप्त

सेंसेक्स सर्वकालिक उच्च स्तर पर, निफ्ट पहली बार 23,000 अंक के पार

मुंबई। घरेलू बाजार सेंसेक्स और निफ्टी शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में अपने नए सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गए। बीएसई का 30 शेयर वाला सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 164.24 अंक चढ़कर 75,582.28 अंक के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। एनएसई निफ्टी 36.4 अंक की बढ़त के साथ पहली बार 23,000 अंक के पार पहुंचा। वह 23,004.05 अंक के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर रहा। सेंसेक्स की कंपनियों में बजाज फाइनेंस, लार्सन एंड टुब्रो, टाटा स्टील, भारतीय स्टेट बैंक, एचडीएफसी बैंक और भारती एयरटेल के शेयर सबसे अधिक मुनाफे में रहे। महिंद्रा एंड महिंद्रा, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, मारुति और जेएसडब्ल्यू स्टील के शेयरों को नुकसान हुआ। एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, हांगकांग का हैंगसेंग, जापान का निक्की और चीन का शंघाई कम्पोजिट नुकसान में रहे। अमेरिकी बाजार बृहस्पतिवार को नकारात्मक रुख के साथ बंद हुए। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.05 प्रतिशत की बढ़त के साथ 81.40 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा था। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) पूंजी बाजार में बृहस्पतिवार को लिवाल रहे और शुद्ध रूप से 4,670.95 करोड़ रुपये की कीमत के शेयर खरीदे।

जी ने विलय रद्द करने के लिए सोनी से नौ करोड़ अमेरिकी डॉलर का समाप्ति शुल्क मांगा

नयी दिल्ली। जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज ने 10 अरब अमेरिकी डॉलर के विलय सौदे को रद्द करने के लिए सोनी समूह से नौ कराड़े अमेरिकी डॉलर (करीब 748.7 करोड़ रुपये) के समाप्ति शुल्क की मांग की है। जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड (जील) ने बृहस्पतिवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि उसने सोनी समूह की दो संस्थाओं सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया (एसपीएनआई) और बांग्ला एंटरटेनमेंट (बीईपीएल) से समाप्ति शुल्क मांगा है। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया को अब कल्वर मैक्स एंटरटेनमेंट के नाम से जाना जाता है। विलय सहयोग समझौते (एमसीए) के तहत कल्वर मैक्स और बीईपीएल के उल्लंघनों के कारण जील ने 23 मई 2024 को एक पत्र जारी करके एमसीए को समाप्त कर दिया है। कंपनी ने एमसीए के प्रावधानों के तहत कल्वर मैक्स और बीईपीएल से समाप्ति शुल्क मांगा है। जील ने कहा, '' एमसीए के तहत कल्वर मैक्स और बीईपीएल अपने दायित्वों को पूरा करने में विफल रहे हैं। इसलिए कंपनी ने एमसीए को समाप्त कर दिया है और कल्वर मैक्स तथा बीईपीएल को समाप्ति शुल्क का भुगतान करने को कहा है जो एमसीए के तहत नौ करोड़ अमेरिकी डॉलर के बैठता है।'' इससे पहले 22 जनवरी 2024 को सोनी ग्रुप कॉरपोरेशन (एसजीसी) ने कहा था कि जील ने विलय की शर्तों को पूरा नहीं किया और सिंगापुर इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन सेंटर (एसआईएसी) के समक्ष मध्यस्थता कार्यवाही शुरू की तथा समाप्ति शुल्क के रूप में नौ करोड़ अमरीकी डॉलर का दावा किया था। जील ने एसआईएसी के समक्ष इसका विरोध किया था। एसआईएसी ने भारतीय प्रसारक के खिलाफ सोनी समूह को कोई भी अंतरिम राहत से इनकार कर दिया। जील और एसपीएनआई ने 22 दिसंबर 2021 को विलय के लिए एक समझौता किया था। राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण की मुंबई पीठ ने 10 अगस्त 2023 को सोनी समूह की इकाइयों कल्वर मैक्स एंटरटेनमेंट और बीईपीणएल के साथ जील के विलय की योजना को मंजूरी दे दी, जिससे 10 अरब अमेरिकी डॉलर की मीडिया इकाई को आकार दिया जाना था।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान ने किया बड़ा दावा, कहा- इस कारण विराट कोहली जल्द लेंगे संन्यास

माइकल वॉन का कहना है कि, विराट कोहली सामान्य जीवन जीने के इच्छुक हैं। उनकी यही इच्छाएं उन्हें क्रिकेट से दूर ले जा सकती हैं। उन्होंने इंग्लैंड के भारत दौरे से कोहली का दूर रहना इसका सबसे बड़ा उदाहरण बताया है।

भारत के सलामी बल्लेबाज विराट कोहली इन दिनों बेहतरीन फॉर्म में हैं। आईपीएल 2024 में भले ही उनकी टीम एलिमिनेटर मुकाबले में हार कर टूर्नामेंट से बाहर हो गई हो लेकिन कोहली ने अपने प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया है। लेकिन अच्छी फॉर्म के बावजूद लगातार उनके संन्यास को लेकर चर्चाएं भी होती रहती हैं। हालांकि, उनकी फिटनेस के आगे युवा खिलाड़ी भी फेल हैं, उनके फैंस उम्मीद करते हैं कि वह 40 साल तक क्रिकेट खेले। इस बीच इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने चौंकाने वाला दावा किया है। दरअसल, माइकल वॉन का कहना है कि, विराट कोहली सामान्य जीवन जीने के इच्छुक हैं। उनकी यही इच्छाएं उन्हें क्रिकेट से दूर ले जा सकती हैं। उन्होंने इंग्लैंड के भारत दौरे से कोहली का दूर रहना इसका सबसे बड़ा उदाहरण बताया है। वॉन ने क्रिकबज से कहा कि, एक शानदार सीजन रहा। आप विराट कोहली और संन्यास की बात करते हैं, मैं इसे इस तरह से तरह से देखता हूं कि वह लंबे समय तक खेल सकते हैं। वह इतने फिट हैं। जबतक उसका दिमाग न बदले और जाहिर तौर पर जब तक उनका एक युवा परिवार न हो जाए। दो–तीन वर्षों में, सब कुछ बदल जाता है, और वह बस शांत समय बिताना चाहते हैं। हाल ही में कोहली ने आरसीबी के एक इवेंट में खुद ये खुलासा किया था कि जब वह संन्यास लेंगे तो कुछ दिनों के लिए पूरी तरह से गायब हो सकते हैं। ऐसा ही कुछ वॉन ने भी इशारा किया। माइकल वॉन ने कहा कि, मैं इसे पूरी तरह से समझ गया हूं। भारत और इंग्लैंड टेस्ट सीरीज से दूर रहने के दौरान, मेरा मानना है कि वह लंदन गए और सामान्य जीवन व्यतीत किया। मैंने उनके कुछ कमेंट्स पढ़े हैं और उन्हें वह सामान्य जीवन बिल्कुल पसंद आया। मुझे लगता है कि ये विराट को क्रिकेट से दूर ले जा सकता है। जैसे वह बस जाकर कुछ समय के लिए शांत समय बिताना चाहता हो।

बीसीसीआई सचिव जय शाह ने किया कंफर्म, जस्टिन लैंगर और रिकी पोंटिंग को नहीं दिया मुख्य कोच बनने का ऑफर

टी20 वर्ल्ड कप 2024 के साथ ही भारतीय टीम के वर्तमान हेड कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल भी खत्म हो जाएगा। ऐसे में टीम इंडिया का मुख्य कोच बदला जाएगा, जिसके लिए बीसीसीआई ने आवेदन मांगे हैं। इस बीच कई रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि बीसीसीआई ने ऑस्ट्रेलियाई पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग और जस्टिन लैंगर को मुख्य कोच बनने का ऑफर

दिया। हालांकि, अब इन सभी रिपोर्ट्स पर बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने विराम लगा दिया है। उन्होंने कहा कि, बोर्ड ने किसी भी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी को कोचिंग के लिए ऑफर नहीं दिया है। दरअसल, बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कहा है कि, न तो मैंने और न ही बीसीसीआई ने किसी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी से संपर्क किया है। कुछ मीडिया चौनलों में चल रही खबरें पूरी तरह से गलत हैं। पोंटिंग और लैंगर दोनों आईपीएल में क्रमशः दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स के मुख्य कोच के रूप में शामिल हैं। बीसीसीआई सचिव ने आगे कहा कि, हमारी राष्ट्रीय टीम के लिए सही कोच ढूंढना एक सावधानीपूर्वक और गहन प्रक्रिया है। हम ऐसे व्यक्तियों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो भारतीय क्रिकेट संरचना की गहरी समझ रखते हैं और रैंकों में आगे बढ़े हैं। साह ने ये भी बताया कि भारतीय घरेलू क्रिकेट की समझ होना अगले कोच की नियुक्ति के लिए अहमद मानदंडों में से एक होगा। उन्होंने कहा कि ये समझ टीम इंडिया को अगले स्तर तक ले जाने के लिए अहम होगी। बता दें कि, हाल ही में जस्टिन लैंगर और रिकी पोंटिंग ने इस बात का खुलासा किया था कि उन्हें बीसीसीआई की तरफ से मुख्य कोच के पद के लिए प्रस्ताव आया था। हालांकि, दोनों ने इस ऑफर को खारिज कर दिया। अब बोर्ड सचिन ने दोनों दिग्गजों के दावे को खारीज कर दिया है।

गौतम गंभीर के नाम पर जोर

वहीं, पूर्व भारतीय खिलाड़ी गौतम गंभीर भी मुख्य कोच के दावेदार हैं। दरअसल, कुछ रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि, बीसीसीआई ने पूर्व सलामी बल्लेबाज गंभीर से इसको लेकर चर्चा की है। गंभीर इस समय आईपीएल में केकेआर के मेंटॉर हैं। उनकी मेंटरशिप में टीम फाइनल में पहुंच चुकी है। इससे पहले वह लखनऊ सुपर जायंट्स के मेंटॉर थे।

तीनों फॉर्मेट के लिए एक हेड कोच

बीसीसीआई सचिव जय शाह ने हाल ही में साफ किया था कि अगल फॉर्मेट के लिए अगल कोच नहीं होगा। बल्कि ऐसे में तीनों फॉर्मेट के लिए एक ही कोच की तलाश होगी। जो 3.5 साल तक भारतीय टीम की जिम्मेदारी संभालेगा। वहीं नए कोच के आवेदन के लिए बोर्ड ने आवेदन की आखिरी तारीख 27 मई को निर्धारित की है।

पोको ने दो साल में एक करोड़ स्मार्टफोन बिक्री का लक्ष्य रखा

स्मार्टफोन विनिर्माता पोको की दो साल में एक करोड़ मोबाइल फोन बेचने की योजना है। इस तरह वह देश की शीर्ष पांच स्मार्टफोन कंपनियों में अपनी जगह बनाना चाहती है। पोको इंडिया के प्रमुख हिमांशु टंडन ने बृहस्पतिवार को एक कार्यक्रम में कहा कि कंपनी ने भारतीय स्मार्टफोन बाजार के लिए महत्वाकांक्षी योजना बनाई है। उन्होंने कहा, ''हम देश की प्रमुख स्मार्टफोन कंपनियों में शामिल होना चाहते हैं। इसके लिए हमें एक करोड़ फोन की बिक्री का आंकड़ा छूना होगा। हम अगले दो–तीन वर्षों में शीर्ष पांच ब्रांड को चुनौती दे पाएंगे।'' पोको ने हाल ही में वनप्लस को पीछे छोड़कर भारत की सातवीं बड़ी स्मार्टफोन कंपनी का तमगा हासिल किया है। हालांकि, एंड्रॉयड फोन बाजार में पोको छठे स्थान पर है। अब उसकी भारतीय बाजार में हिस्सेदारी 5.9 प्रतिशत हो चुकी है। बाजार अनुसंधान फर्म आईडीसी के मुताबिक, भारत में पोको फोन की बिक्री सालाना आधार पर करीब 72 प्रतिशत बढ़ी है। पोको ने अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए अपने लोकप्रिय मॉडल पोको एफ6 के तीन संस्करण उतारे। इनकी बिक्री भारत में 29 मई से शुरू होगी।

T20 World Cup: ICC ने युवराज सिंह और क्रिस गेल के बाद शाहिद अफरीदी को बनाया एंबेसडर

युवराज सिंह और क्रिस गेल के बाद अब आईसीसी ने पाकिस्तान के पूर्व कप्तान और ऑलराउंडर शाहिद अफरीदी को टी20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए एम्बेसडर बनाया है। बता दें कि, इस साल टी20 वर्ल्ड कप का आयोजन वेस्टइंडीज और यूएस में 2 जून से होगा। अफरीदी 2007 में टी20 वर्ल्ड कप के डेब्यू के दौरान फाइनल तक पाकिस्तान टीम का अहम हिस्सा और फिर 2009 सीजन में विजयी अभियान में साथ थे। टूर्नामेंट की अपनी स्मृतियों को याद करते हुए अफरीदी ने टूर्नामेंट के एम्बेसडर के रूप में आगामी सीजन का हिस्सा बनने पर अपना उत्साह जताया है। वहीं इस दौरान शाहिद अफरीदी ने कहा कि, आईसीसी पुरुष टी20 वर्ल्ड कप मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखता है। उद्घाटन सीजन में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट के रूप में सम्मानित होने से लेकर 2009 में ट्रॉफी उठाने तक, मेरे करियर के कुछ सबसे यादगार पल मैंने इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में बिताएं हैं। साथ ही उन्होंने पिछले कुछ सालों में टी20 वर्ल्ड कप के विकास पर कहा कि, टी20 वर्ल्ड कप टूर्नामेंट काफी विकसित हुआ है।

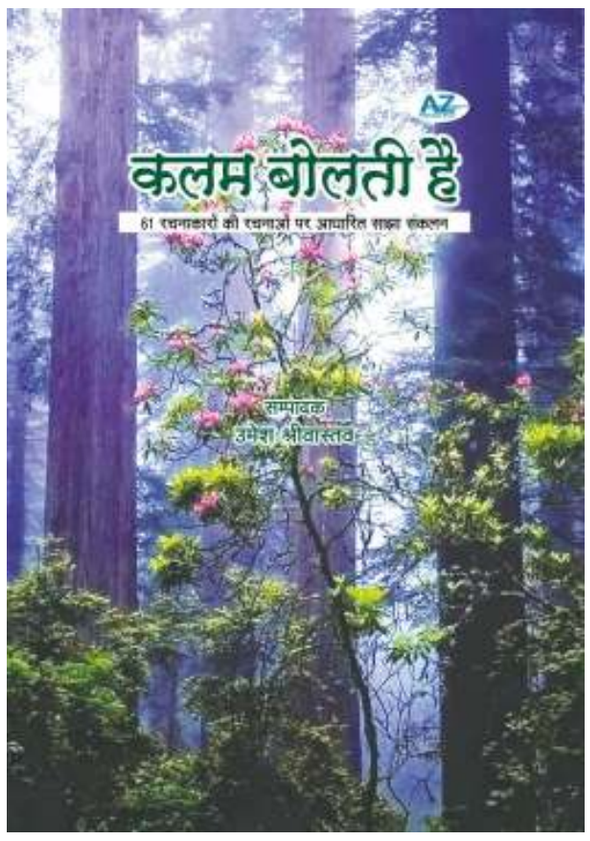

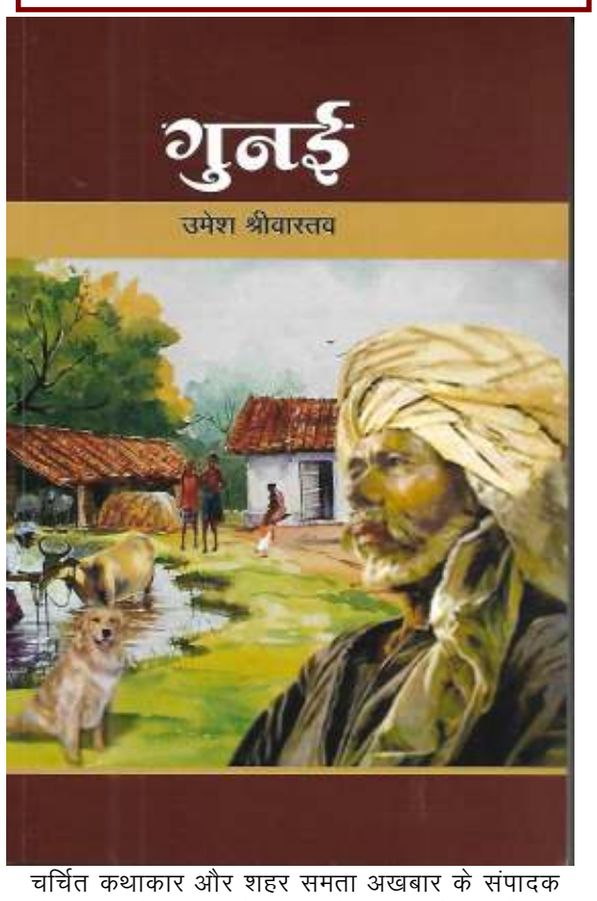

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित उपन्यास गुनई अमेजन पर उपलब्ध हो गया है। पुस्तक

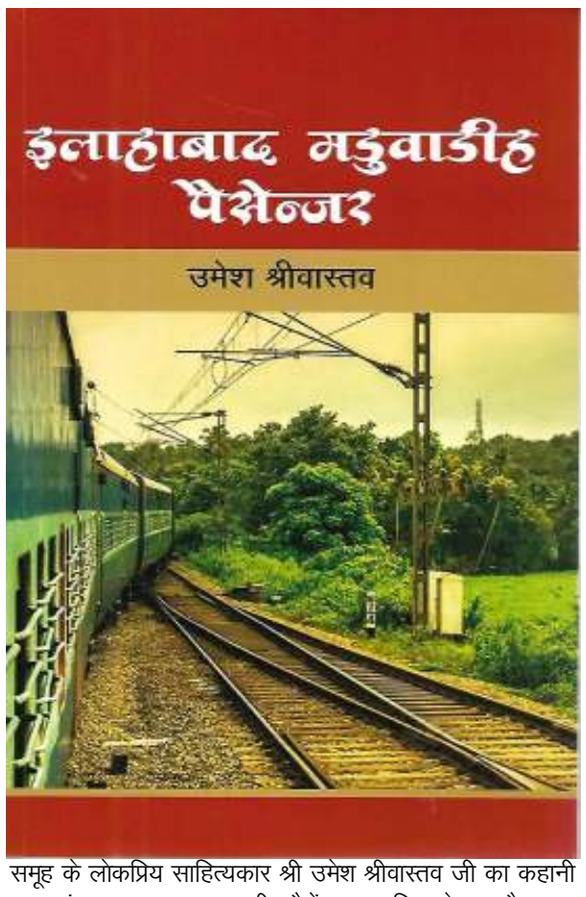

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना। पुस्तक अमेजन पर उपलब्ध है।

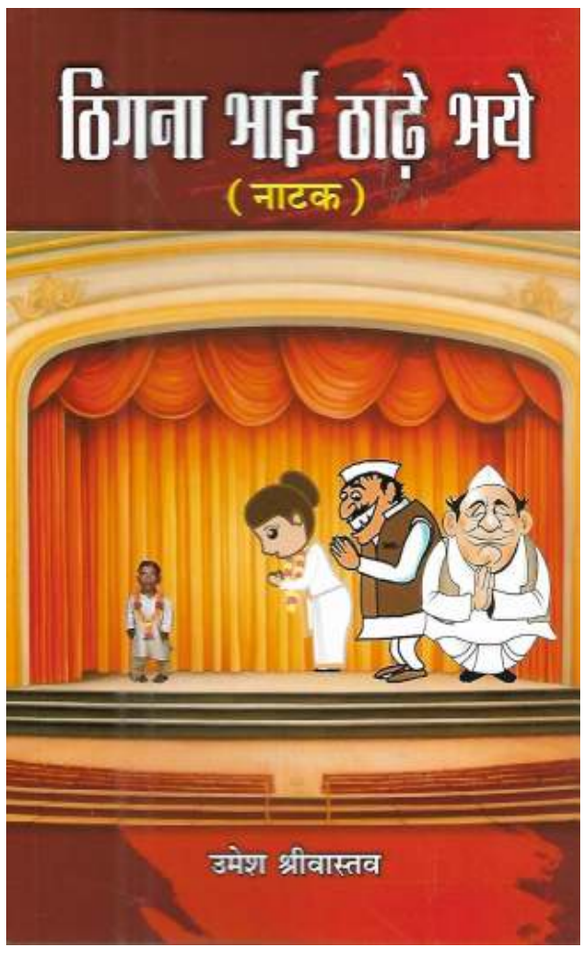

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

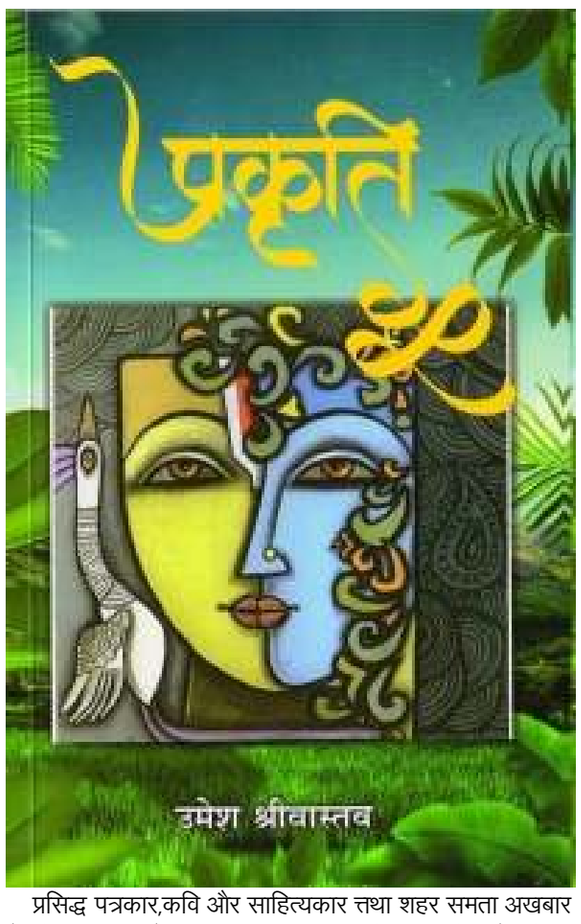

प्रसिद्ध पत्रकार,कवि और साहित्यकार त्तथा शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव का काव्य संग्रह ष्प्रकृतिष् लोकरंजन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है और अमेजन पर उपलब्ध है।

सम्पादकीय.....

एक हादसा, सौ–सवाल

पुणे में अमीर बाप के बिगड़ैल अल्पवयस्क बेटे ने शराब के नशे में दो युवा इंजीनियरों को रौंदने के बाद जिस तरह आनन–फानन में जमानत हासिल की, उस घटना ने तमाम सवालों को भी जन्म दिया। दुस्साहस देखिये कि दो करोड़ रुपये से अधिक महंगी विदेशी कार को सड़क पर यह किशोर दो सौ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ा रहा था। उस धनी बाप के नशेड़ी बेटे को पुणे की सड़कों में रोकने वाला कोई नहीं था। उसने कई जगह दोस्तों के साथ शराब पार्टियां निबटाने के बाद अपनी पोर्श कार को इतनी अनियंत्रित गति से दौड़ाया कि मोटरसाइकिल सवार दो इंजीनियरों को मौत की नींद सुला दिया। संयोग से दोनों इंजीनियर जबलपुर, मध्यप्रदेश के ही थे। इस मामले में सोशल मीडिया पर आक्रोश का लावा तब फूटा जब 17 साल कुछ महीनों की उम्र वाले अभियुक्त को किशोर होने के नाते कुछ ही घंटों में जमानत दे दी गई। दो परिवारों के उम्मीदों के चिराग बुझ गए और किशोर न्यायालय ने अभियुक्त को कुछ निर्देश देकर ही छोड़ दिया । सोशल मीडिया पर यह विषय रोष का विषय बना रहा है कि किशोर न्याय बोर्ड ने जमानत देते वक्त उसे महज दुर्घटना पर निबंध लिखने, 15 दिन तक ट्रैफिक पुलिस के साथ काम करने तथा मनोचिकित्सक से शराब की लत का इलाज कराने को कहा। इन शर्तों को सुनकर सोशल मीडिया पर गंभीर अपराधों में लिप्त किशोरों को वयस्कों की तरह दंड देने की मांग तेज हुई। फिर जब इस मामले में राजनीतिक प्रतिक्रिया तेज हुई तो अभियुक्त किशोर के अरबपति बिल्डर पिता और नाबालिगों को शराब परोसने वाले होटल के अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया। सामाजिक जागरूकता की पहल रंग लायी और चुनावी माहौल में तुरत–फुरत कार्रवाई हुई। मुख्यमंत्री व उप मुख्यमंत्री की सख्त कार्रवाई के निर्देश से लोगों में सकारात्मक संदेश गया। साथ ही पीड़ित पक्ष में भी विश्वास जगा कि कानून काम करता है चाहे आरोपी कितना भी ताकतवर क्यों न हो। निस्संदेह, ऐसे मामलों में अभियुक्तों के साथ शून्य सहिष्णुता का संदेश जाना ही चाहिए।बहरहाल, इस घातक दुर्घटना के बाद सार्वजनिक विमर्श में यह सवाल फिर उठा कि गंभीर अपराधों में किशोरों की संलिप्तता होने पर वयस्कों के कानून के हिसाब से उन्हें सजा क्यों नहीं मिलती। सवाल यह है कि धनाढ्य बिल्डर ने क्यों किशोर पुत्र को बिना लाइसेंस के कार चलाने की अनुमति दी? क्यों बेटे को शराब पार्टी करने की इजाजत दी? क्यों होटल वालों ने किशोरों को शराब पीने की सुविधा दी? जब किशोर ने बार–बार जानबूझकर तमाम कानूनों का उल्लंघन किया तो उसे सामान्य कानून के तहत दंडित क्यों नहीं किया जाना चाहिए? बहरहाल नये सिरे से किशोर न्याय अधिनियम में सुधार की बहस तेज हुई। एक गंभीर आपराधिक घटना के बाद किशोर न्याय बोर्ड द्वारा किशोर को मामूली परामर्श के बाद छोड़ना भी विवाद का विषय बना। सामाजिक व राजनीतिक दबाव के बाद पुणे पुलिस द्वारा की गई तुरंत कार्रवाई समय की जरूरत थी। जो कालांतर भविष्य में ऐसी त्रासदियों को टालने में मददगार हो सकती है। कहा जाने लगा कि अपराध के अनुपात में दंड का निर्धारण किया जाना चाहिए। दरअसल, देश के विभिन्न भागों में भी किशोरों द्वारा तेज रफ्तार वाहन चलाने के तमाम मामले प्रकाश में आते रहते हैं, जिसमें खतरनाक ड्राइविंग के चलते कई किशोरों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। ये घटनाएं यातायात कानूनों को सख्ती से लागू करने और किशोर अपराधियों को दंडित करने के लिये कानूनी ढांचे की समीक्षा की आवश्यकता पर बल देती हैं। निस्संदेह, देश की न्यायिक प्रणाली को इस तरह के मामलों में उचित प्रतिक्रिया देनी चाहिए। सही मायनों में अपराधी की उम्र की परवाह किये बिना ऐसे घातक कृत्यों में कड़े दंड के जरिये मिसाल कायम की जानी चाहिए। इससे जहां जनता का विश्वास बहाल होगा, वहीं हमारी सड़कों पर किशोरों की लापरवाह ड्राइविंग से होने वाली मौतों को भी रोका जा सकेगा। निश्चित रूप से इससे दुर्घटनाओं में मारे लोगों के परिजनों को भी न्याय मिल सकेगा।

मोदी मैजिक फेल, लक्ष्य भी ध्वस्त

एजेंसी

भाजपा व संघ दोनों के ही कार्यकर्ता जानते हैं कि मोदी अपने सबसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिये संघर्षरत हैं और वे 400 पार लाकर वह करना चाहते हैं जो भाजपा के कहीं पहले संघ का लक्ष्य रहा है– संविधान व लोकतंत्र को समाप्त कर मनुवादी व्यवस्था को लाना।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जिस कथित करिश्माई व्यक्तित्व के बल पर भारतीय जनता पार्टी ने इस लोकसभा चुनाव में अपने बल पर 370 और नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) के बल पर 400 सीटों से ज्यादा का लक्ष्य निर्धारित किया था, वह मतदान के पांच चरण निकलते–निकलते इसलिये हवा में उड़ता नजर आ रहा है क्योंकि अब न तो मोदी के पास कोई नयी बात कहने को रह गई है और न ही उनके व्यक्तित्व से लोग आकर्षित हो पा रहे हैं। इसका कारण यही है कि भाजपा के विमर्श का आधार उनका चेहरा था, जबकि उन्हें टक्कर देता इंडिया गठबन्धन विमर्श के आधार पर कई करिश्माई व्यक्तित्व गढ़ चुका है जो देश के चारों दिशाओं में धूम मचा रहे हैं। विमर्श की बात करें तो लगता है कि भाजपा के पास अपना कोई भी नैरेटिव नहीं रह गया है। प्रधानमंत्री मोदी जो कहते हैं वही भाजपा का विमर्श और विषय होता है, और मोदी जी जो कहते हैं वह कांग्रेस या इंडिया गठबन्धन के नेताओं द्वारा कही गई किसी बात की प्रतिक्रिया मात्र होती है। अब भाजपा की सभाओं में दिखने वाली भीड़ केवल जुटाई गई होती है जो लौटते वक्त कोई नयी बात लेकर नहीं जा रही है। चूंकि यह हुजूम लाया हुआ है इसलिये वह मोदी या भाजपा के भाषणों के दौरान कहां पर श्मोदी मोदीश कहना है, बखूबी जानता है। इसे ही दरबारी मीडिया प्रस्तुत करता है। यह माहौल बनाने में उसका योगदान होता है जबकि अब तक सम्पन्न हुए 418 लोकसभा सीटों पर मतदान के बाद जो अनुमान आ रहे हैं वे साफ बता रहे हैं कि भाजपा–एनडीए लगभग सभी राज्यों में पिछड़ रही है। मोदी मैजिक तो हवा में उड़ ही चुका है, वह अपने साथ 370–400 पार के नारे को भी उड़ा ले गया है। अनेक ऐसे संकेत मिल रहे हैं जो इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि खुद भाजपा कार्यकर्ता एवं उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक इस बार के चुनाव को लेकर उदासीन हैं। इसका एक संकेत सभी चरणों में कम मतदान का होना है। भाजपा व संघ दोनों के ही कार्यकर्ता जानते हैं कि मोदी अपने सबसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिये संघर्षरत हैं और वे 400 पार लाकर वह करना चाहते हैं जो भाजपा के कहीं पहले संघ का लक्ष्य रहा है– संविधान व लोकतंत्र को समाप्त कर मनुवादी व्यवस्था को लाना। ऐसे आड़े वक्त में अगर दोनों संगठनों के कार्यकर्ता मतदान कराने के लिये 2014 एवं 2019 की तरह घरों से नहीं निकल रहे हैं तो मानकर चलना होगा कि इन पर से मोदी की पकड़ छूट चुकी है। इन संगठनों के कार्यकर्ता यह भी जान गये हैं कि जिन उद्देश्यों के लिये नरेंद्र मोदी ने यह नारा दिया है वह हासिल करने के लायक नहीं है। सम्भवतः उन्होंने यह भी सोच लिया है कि अगर हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को साकार करना भी है तो वह कम से कम नरेंद्र मोदी और अमित शाह के नेतृत्व में तो बिलकुल नहीं करना है क्योंकि दोनों ने इसके प्रति लोगों में शंकाएं एवं अरुचि पैदा कर दी है। इन दोनों संगठनों के कार्यकर्ता यदि अपनी नाराजगी या उदासीनता जो भी रही हो, उसे त्यागकर मोदी की मदद के लिये आना भी चाहते तो अब भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के उस बयान के बाद तो बिलकुल ही आने से रहे जिसमें नड्डा ने कहा है कि श्अब भाजपा बड़ी हो चुकी है तथा उसे अब राजनैतिक कामों के लिये संघ की जरूरत नहीं रह गई है। नड्डा का यह भी मानना है कि 'पहले चाहे संघ पर भाजपा आश्रित थी पर अब दोनों अपने–अपने कामों को स्वतंत्रतापूर्वक करते हैं– भाजपा राजनीतिक काम और संघ विचारधारा सम्बन्धी कार्यकलाप व सांस्कृतिक गतिविधियां। यह तय है कि इस बयान के बाद अब भाजपा को अगले तथा अंतिम दो चरणों में संघ की मदद मिलने से रही। 400 सीटों का लक्ष्य पाना तो दूर, अब वह सत्ता बचा ले यही बहुत है। कुछ बातें और जो सामने आई हैं उनमें प्रमुख यह है कि भाजपा ने जिस विषय को इस चुनाव का प्रमुख मुद्दा बनाने की सोची थी, वह पूरी तरह से गौण हो गया है– अयोध्या में राम मंदिर का। 2019 के बाद से ही बड़े सुनियोजित तरीके से मोदी ने रामलला मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ कराया और आनन–फानन में उसका निर्माण करवाया। इतना ही नहीं, आधे–अधूरे रूप से निर्मित मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा स्वयं मोदी ने एक भव्य समारोह में की। कुछ दिनों पहले एक प्रतिष्ठित संगठन ने जो सर्वे किया उसके नतीजों ने भाजपा को मैदान से ही बाहर कर दिया। सर्वेक्षण ने बतलाया कि केवल 6 फीसदी लोग ही राम मंदिर को चुनाव के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा मानते हैं। ज्यादातर लोगों ने बेरोजगारी व महंगाई को सबसे अहम मसले बतलाकर मोदी व भाजपा की सारी तैयारियां ध्वस्त कर दीं। यही कारण है कि खुद मोदी ने अपने चुनाव प्रचार में इस विषय का सबसे कम बार उल्लेख किया। कांग्रेस के कथित परिवारवाद सम्बन्धी मोदी–शाह के बयानों से लोग ऊब चुके हैं और विपक्षी नेताओं पर लगाये जाने वाले भ्रष्टाचार सम्बन्धी आरोपों पर भी कोई भरोसा नहीं कर रहा क्योंकि सभी भ्रष्टाचारियों के लिये भाजपा ने द्वार खोल रखे हैं। इलेक्टोरल बॉन्ड्स का पर्दाफाश है ही। जिस एनडीए के दम पर भाजपा 400 पार जाना चाहती है उसकी सभाओं में सहयोगी नेताओं की मौजूदगी नहीं होती और इंडिया की तरह उसकी संयुक्त सभाएं भी नहीं होतीं। मोदी मैजिक फेल, लक्ष्य भी ध्वस्त...!

मोदी खेमे और संघ के बीच दरार

अरुण श्रीवास्तव

यह अपरिहार्य था। अपने अस्तित्व के सौ वर्षों में इससे पहले कभी भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), जो दक्षिणपंथी राजनीतिक संगठन भाजपा का मूल संगठन है, के किसी भी सरसंघचालक को इस तरह के अपमान का सामना नहीं करना पड़ा था, जैसा कि वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत को झेलना पड़ा है। उनका अपमान किसी और ने नहीं बल्कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा ने किया है। यह समझ से परे है कि नड्डा संघ परिवार के सभी समूहों के प्रमुख का अपमान कैसे कर सकते हैं! लेकिन ऐसा हुआ। केवल चंद दिन पहले, उन्होंने एक सार्वजनिक बयान दिया था हम (भाजपा) बड़े हो गये हैं, हम अब और अधिक सक्षम हैं भाजपा खुद चलती है। मथुरा और काशी में विवादित स्थलों पर मंदिर को लेकर पार्टी की कोई योजना नहीं है। यह उस समय से विकसित हुआ है जब इसे आरएसएस की जरूरत थी और अब यह श्सक्षमश है और अपना काम खुद चलाता है। आरएसएस एक वैचारिक मोर्चा है और अपना काम खुद करता है। नड्डा के इस दुस्साहस से पूरा आरएसएस नेतृत्व स्तब्ध है। ऐसा नहीं है कि वे उस व्यक्ति से अनभिज्ञ हैं, जिसने नड्डा को इस तरह का अभद्र और घटिया बयान देने के लिए उकसाया था। लेकिन इसके लिए वे फिर भागवत को दोषी मानते हैं। लगभग सभी वरिष्ठ नेता यह महसूस करते हैं कि भागवत ने एक फ्रेंकेंस्टीन बनाया है। ये नेता लगातार नरेंद्र मोदी की शासन शैली और कार्यप्रणाली को उनके ध्यान में लाते रहे हैं, लेकिन उन्होंने इन्हें गंभीरता से लेने से इनकार कर दिया। दो साल पहले, आरएसएस के दूसरे नंबर के महासचिव, दत्तात्रेय होसबले ने भाजपा सरकार की एक बहुत ही जर्जर छवि पेश की थी, जिसमें कहा गया था कि मोदी सरकार चलाने के प्रति गंभीर नहीं हैं। आरएसएस नेताओं का कहना है कि यदि भागवत ने कुछ कार्रवाई की होती तो स्थिति इतनी खराब नहीं होती, जहां आरएसएस के अस्तित्व और कद को एक ऐसे व्यक्तिके माध्यम से चुनौती दी जा रही है, जिसके साथ मोदी और अमित शाह एक आश्रित से अधिक व्यवहार नहीं करते हैं। आरएसएस आकाओं को अपनी मिसाइल भेजने के लिए नड्डा ने एक ऐसा समय चुना जो सीधे तौर पर संकेत देता है कि सबसे बुरा समय अभी आना बाकी है। किसी भी चतुर राजनेता ने कभी भी अपने राजनीतिक और वैचारिक गुरु के अधिकार को अपमानित करने की हिम्मत नहीं की होगी, वह भी महत्वपूर्ण लोकसभा चुनाव से समाप्त होने के ठीक पहले क्योंकि इससे पूरे देश में, खासकर कार्यकर्ताओं के बीच एक गलत संदेश जायेगा। लेकिन उन्होंने परिणामों की परवाह किये बिना ऐसा किया। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके राजनीतिक आका भाजपा को संघ के प्रभुत्व से मुक्त कराने और उसे दक्षिणपंथी विचारों और हिंदुत्व की राजनीति के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में पेश करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। भयावह परिणामों से बेपरवाह, नड्डा ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा कुछ मिथकों को तोड़ देगी जो सभी को आश्चर्यचकित कर देगी। हालांकि उन्होंने कहा कि मोदी को पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक लोगों का अपार आशीर्वाद प्राप्त है, लेकिन उन्होंने श्मिथकोश की वास्तविक प्रकृति का खुलासा नहीं किया। उन्होंने फिर भी यह संकेत दिया कि आरएसएस भाजपा का वैचारिक गुरु नहीं रहेगा। उनका बयान काफी भरा–पूरा है, लेकिन इससे मोदी के इरादे नहीं छुपते कि वह अपनी सत्ता और व्यक्तित्व पर किसी भी तरह का क्षरण नहीं आने देंगे। वह चुपचाप आरएसएस के आदेश को स्वीकार नहीं करने वाले हैं। तथ्य यह है कि उन्होंने कभी भी आरएसएस की बात नहीं मानी और यहां तक कि कई मौकों पर उन्होंने उन्हें कूड़ेदान में फेंकने का साहस भी किया। 2019 में दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद मोदी ने अपने जौहर दिखाना शुरू कर दिया। लेकिन आरएसएस नेतृत्व ने उनकी जांच नहीं की। अजीब बात है कि भागवत मोदी के माध्यम से भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के अपने मिशन की सफलता से इतने खुश थे कि उन्होंने उनके गलत कामों को नजरअंदाज करना पसंद किया। मोदी के प्रति उनका दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि भागवत को मिशन हासिल करने के लिए अपनाये गये तंत्र की तुलना में अंतिम लाभ की अधिक चिंता थी। उनके लिए शुद्धता, शुचिता और पारदर्शिता महत्वपूर्ण नहीं थी। भागवत के लिए चौंकाने वाली बात यह है कि मोदी की कार्यशैली ज्यादा मायने नहीं रखती, जबकि इससे आरएसएस नेतृत्व में गहरी नाराजगी है। आरएसएस नेतृत्व की मुख्य बेचैनी मोदी की शासन शैली और उनका व्यक्ति–केंद्रित संचालन था। यहां तक कि उन्होंने भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं को भी बौना बना दिया। आरएसएस के आदेशों को न मानने या उसके निर्देशों की घोर अवहेलना ने उन्हें उनके प्रति शत्रुतापूर्ण बना दिया है। लेकिन वे असहाय महसूस कर रहे थे क्योंकि उनका मुखिया उन्हें बंधन में बांधने को तैयार नहीं था। फिर भी संघ के सूत्रों का कहना है कि आरएसएस के कुछ वरिष्ठ नेताओं द्वारा मोदी के खिलाफ भागवत से की गई शिकायत ने संकट को बढ़ा दिया है। इन नेताओं ने, जिनमें अधिकतर महाराष्ट्र के थे, भागवत के सामने विरोध जताया था कि मोदी महाराष्ट्र को गुजरात का उपनिवेश बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री महाराष्ट्र में गुजराती उद्योगपतियों के व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने के लिए रास्ते से हट गये। यह उनके आग्रह पर ही था कि महाराष्ट्र में स्थापित होने वाली कुछ औद्योगिक इकाइयों को गुजरात में स्थानांतरित कर दिया गया था। उन्होंने यह भी आशंका जताई कि इससे एक बार फिर गुजराती लोग महाराष्ट्रियों के खिलाफ खड़े हो जायेंगे। दिसंबर 1953 में फजल अली आयोग ने तेलुगु भाषी लोगों तक के लिए भिन्न राज्य की घोषणा की, जिसमें आंध्र प्रदेश भी शामिल था। लेकिन वह महाराष्ट्र और गुजरात को अलग करने का कोई समाधान नहीं ढूंढ पाई। मराठी भाषी लोग हर साल 1 मई को महाराष्ट्र दिवस के रूप में मनाते हैं। यह गुजरात राज्य का स्थापना दिवस भी है। यह वह दिन है जब मुंबई शहर सहित महाराष्ट्र राज्य का गठन किया गया था। एक लंबे संघर्ष के कारण तत्कालीन बॉम्बे राज्य को दो राज्यों महाराष्ट्र और गुजरात में विभाजित किया गया था। उस समय कुल 107 लोगों की जानें चली गई थीं। आरएसएस नेताओं ने कर्नाटक के नंदिनी मिल्क कोऑपरेटिव को बंद करने और संचालन को गुजरात स्थित अमूल को सौंपने के उनके प्रयास की ओर भी इशारा किया। यह भी बताया गया कि कैसे दो गुजराती नेता अपने पद और कार्यालय का उपयोग करके राज्यों पर अपना आदेश थोप रहे थे और महाराष्ट्र सरकार को गुजराती व्यापारियों और व्यापारियों की देखभाल करने के लिए मजबूर कर रहे थे। अडानी पर राहुल गांधी के लगातार हमले ने आरएसएस नेताओं को बहुत अजीब स्थिति में डाल दिया। उन्हें महाराष्ट्र आरएसएस नेताओं के सवाल का जवाब देना मुश्किल हो रहा था। राहुल के हमले का एक रणनीतिक आयाम है। अडानी पर निशाना साधकर वह मोदी की साजिशपूर्ण कार्रवाई को बेनकाब करना चाहते थे। मोदी के साथ आरएसएस के संबंधों में और अधिक तनाव आने की वजह यह है कि राहुल पर हमला करने में धीमे रहने के आरएसएस के सुझाव को सुनने में मोदी की अनिच्छा है। यह बताया गया कि विभिन्न स्रोतों से जमीनी स्तर की प्रतिक्रिया ने इस तथ्य को स्पष्ट किया कि उनके हमले केवल राहुल को शक्तिशाली नेता के रूप में उभरने में मदद कर रहे थे। राहुल के सवालों और आरोपों को खारिज करने के कारण आरएसएस नेता भी उनसे खुश नहीं थे। प्रधानमंत्री के तौर पर उन्हें राहुल का सामना करना चाहिए था और उनके सवालों का जवाब देना चाहिए था। पहले चरण के मतदान के तुरंत बाद हुई आरएसएस नेताओं की बैठक में, कुछ आरएसएस नेताओं ने इस बात पर भी चिंता व्यक्त की कि क्या वह भारत पर शासन करने में सक्षम हैं। इन नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि आरएसएस नेतृत्व को होसबले की निंदा के तुरंत बाद कार्रवाई करनी चाहिए थी।

नरेन्द्र मोदी की अमर चित्रकथा

सर्वमित्रा सुरजन

एक न्यूज चौनल की एंकर को दिए तथाकथित एक्सक्लूसिव साक्षात्कार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ही बारे में एक बड़ा खुलासा किया। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि वे बॉयलॉजिकल यानी जैविक तरीके से इस दुनिया में नहीं आए हैं, उनमें परमात्मा का अंश है। श्री मोदी ने ये सीधे–सीधे नहीं कहा कि वे दैवीय अवतार हैं, लेकिन उनकी बातों से यही समझा जाना चाहिए। नरेन्द्र मोदी के बचपन के कई किस्से अमर चित्रकथा की तरह दस सालों में प्रचारित–प्रसारित किए जा चुके हैं। उनकी मां के घर–घर जाकर बर्तन मांजने से लेकर, खुद नरेन्द्र मोदी के वडनगर स्टेशन में चाय बेचने, मगरमच्छ के बच्चे को घर में उठाकर ले आने, हिमालय की गोद में तपस्या करने, फकीर बनकर रहने जैसी अनगिनत कहानियां देश सुन चुका है। नरेन्द्र मोदी भिक्षाटन करके जीवनयापन भी करते थे, इसी दौरान उनकी विदेश यात्राओं की तस्वीरें भी हैं और फिर वे बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में भी हिस्सा लेते हैं। वे संघ के कार्यालयों में दरी बिछाने, झाड़ू लगाने जैसे काम करते हैं, फिर ये भी बताते हैं कि उन्होंने ई मेल का इस्तेमाल कब से करना शुरु कर दिया, उनके पास डिजीटल कैमरा किस जमाने में था। अमेरिका का एक किस्सा नरेन्द्र मोदी ने बताया कि उनके पास एक डिजीटल डायरी हुआ करती थी, और अमेरिका की एक गैजेट वाली दुकान में उन्होंने उसका एकदम नया संस्करण दिखाने कहा तो उस दुकानदार का जवाब था कि उसने खुद ऐसी डायरी पहली बार देखी है। यानी जो डिवाइस अमेरिका की दुकानों में नहीं थी, वो भारत में फकीरों का जीवन जीने वाले मोदीजी के पास थी। संन्यास, फकीरी, तपस्या के साथ डिजीटल उपकरण भी नरेन्द्र मोदी के पास थे और इन सबके बीच उन्होंने एंटायर पॉलिटिकल साइंस यानी समग्र राजनीति विज्ञान में एम ए की डिग्री भी हासिल कर ली।अगले बरस श्री मोदी के जैविक तौर पर 75 बरस पूरे होने वाले हैं। अवतारों की आयु की गणना किस हिसाब से की जाती है, यह हमें नहीं मालूम। इस बारे में नरेन्द्र मोदी ही बता सकते हैं कि उनकी अवतारी आयु कितनी है। वैसे साधारण इंसानों के लिए नरेन्द्र मोदी के 75 बरसों की कहानियों को ही सिलसिलेवार तरीके से लगाना कठिन है। अगर कोई शोधार्थी नरेन्द्र मोदी के जीवन पर शोध करे, तो उसके लिए बड़ी समस्या रहेगी कि वह कब और कहां से इसकी शुरुआत करे। नेहरू–गांधी पर अनगिनत किताबें लिखी गई हैं, कई शोध पत्र तैयार हुए हैं, जिसमें उनके पारिवारिक जीवन, बचपन, शिक्षा, राजनैतिक–सामाजिक जीवन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान, अलग–अलग राजनेताओं के साथ उनके रिश्ते, उनके आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक मुद्दों पर विचार, वैश्विक राजनीति पर उनका दृष्टिकोण इन तमाम पहलुओं पर चर्चा की गई है, लेकिन सभी में तथ्य एक जैसे ही हैं। उनमें कोई झोल, कोई बदलाव नहीं है कि एक किताब में गांधीजी को इंग्लैंड से पढ़ा हुआ बताया गया है, और दूसरी किताब में दावा है कि उन्होंने तो पहले ही अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार कर दिया था। हर किताब, हर लेख में तारीखों और तथ्यों में कोई बदलाव नहीं है। क्योंकि गांधी–नेहरू का जीवन जैसा था, सबके सामने था। उनके विचारों में भी अगर कोई बदलाव आया तो उसका भी तर्क सहित कारण मौजूद है कि किस घटना के बाद किसी मुद्दे पर उनके विचार बदले या उनका निर्णय बदला। क्योंकि गांधी–नेहरू भी अपने कार्यों और विचारों से महान होने के बावजूद थे तो इंसान ही। उनका भी जैविक तौर पर ही जन्म हुआ था। अलबर्ट आइंस्टाइन ने भले ही गांधीजी के लिए कहा था कि आज से पांच सौ साल बाद की पीढ़ियां यह नहीं मानेंगी कि हाड़–मांस का कोई ऐसा इंसान भी था। लेकिन श्री मोदी अपने लिए पांच सौ साल बाद के हालात का इंतजार नहीं करना चाहते। आने वाली पीढ़ियां उनके बारे में क्या कहें और क्या न कहें, इससे बेहतर है कि खुद ही अपने लिए किस्से गढ़ लेंनरेन्द्र मोदी ने जब खुद में दैवीय अंश होने का ऐलान कर दिया है तो फिर नेहरू–गांधी से उनका मुकाबला अपने आप खारिज हो जाता है। एक अन्य साक्षात्कार में श्री मोदी ने यह दावा भी किया था कि राहुल गांधी उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री इसलिए नहीं बनते देखना चाहते, क्योंकि उन्हें डर है कि फिर वे उनकी दादी और परनाना से आगे निकल जाएंगे। यानी श्री मोदी ने स्वयं को पहले ही इंदिरा गांधी और प.नेहरू से उच्च स्थान दे दिया था। साधारण इंसान के लिए यह बड़ी उपलब्धि होती कि देश के दो पूर्व प्रधानमंत्रियों से आगे वे निकल रहे हैं। लेकिन नरेन्द्र मोदी चूंकि अवतारी हैं, इसलिए उन्हें इतने में संतुष्टि नहीं हुई और अब वे प्रधानमंत्रियों से आगे परम पद अपने लिए बनाना चाहते हैं। देश के कई पूर्व प्रधानमंत्रियों को भारत रत्न दिया गया है, जो देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। लेकिन श्री मोदी के लिए भाजपा को पहले ही कोई अन्य सम्मान गढ़ लेना चाहिए था, जो केवल उन्हें हासिल हो, क्योंकि भारत रत्न श्री मोदी के लिए संभवतरू पर्याप्त नहीं है।ऐसा लगता है कि श्री मोदी का मुकाबला अब देश के पूर्व प्रधानमंत्रियों से नहीं, सीधे विष्णु के राम और कृष्ण जैसे अवतारों से हैं। राम और कृष्ण की कहानियां देश भर में प्रचलित हैं। उनके अलग–अलग नाम और रूपों से अलग–अलग मंदिर बने हुए हैं। लेकिन इन अवतारों ने भी जीवन तो आम इंसानों की तरह ही जिया और जब भी सत्ता का सवाल आया तो सत्ता की जगह पीड़ित प्रजा के साथ खड़ा होना स्वीकार किया। धार्मिक ग्रंथों में भारत का संविधान नहीं है, जो प्रजा को नागरिक होने की शक्ति से संपन्न करता है। उसे अधिकार देता है कि वह अपने शासक से आंख में आंख डालकर सवाल कर सके कि उसके साथ अन्याय क्यों हुआ, उसके हक क्यों मारे गए। इसलिए जब तक किसी धार्मिक ग्रंथ में नरेन्द्र मोदी को अवतारी घोषित नहीं किया जाता, तब तक उन्हें भी संविधान की दी गई शक्ति के आधार पर जनता के प्रति जवाबदेह तो माना ही जाएगा। इस जिम्मेदारी से वे खुद को दैवीय शक्ति का अंश बताकर बरी नहीं हो सकते। धार्मिक ग्रंथों में अवतारी पुरुषों को पीड़ितों के पक्ष में, न्याय के साथ खड़ा हुआ इसलिए दिखाया गया है ताकि इंसान सबक ले सकें कि ब्रह्मांड, ईश्वर, दैवीय शक्ति, हर किसी के आगे जब भी सच और झूठ, गलत और सही में से किसी एक का पक्ष लेने की बात आएगी तो वो सच और सही का ही साथ देंगे। इसलिए दुर्योधन को कृष्ण अपनी सारी सेना देते हैं, लेकिन खुद अर्जुन के रथ के सारथी बनते हैं। इसी तरह राम बाली का साथ न देकर अन्याय का शिकार बने सुग्रीव का साथ देते हैं।

रणबीर-आलिया की 'लव एंड वॉर' की शुरू हुई तैयारियां, जानें कब होगी रिलीज

> भंसाली ने बातचीत में कहा-रणबीर, विक्की और आलिया के साथ काम करना अच्छा एक्सपीरियंस है. ये देखना काफी मजेदार होगा कि इन तीनों की कैमेस्ट्री कैसे काम करती है. और एक ट्रायंएग्ल लव स्टोरी है, जो काफी समय से हिंदी सिनेमा में नहीं आई है. तो देखते हैं कि कैसे सब शेप लेता है.

मशहूर फिल्ममेकर संजय लीला भंसाली इन दिनों अपनी वेब सीरीज हीरामंडी द डायमंड बाजार को लेकर काफी चर्चा में बने हुए हैं. इसी के साथ उनके अपकमिंग प्रोजेक्ट के चर्चे भी काफी तेजी के साथ हो रहे हैं. रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल के साथ भंसाली अपने अगले प्रोजेक्ट लव एंड वॉर के लिए पूरी तरह से तैयार हैं. हाल ही में फिल्मेमकर ने इस फिल्म की कहानी को लेकर बात की और बताया कि कैसे ये लव ट्रायंगल के इर्द–गिर्द घूमती हुई नजर आएगी. इसके अलावा वह ये भी देखना चाहते हैं कि बड़े पर्दे पर लीड एक्टर्स के बीच की कैमिस्ट्री किस तरह से दिखाई देगी। संजय लीला भंसाली ने हाल ही में वैरायटी संग बातचीत में लव एंड वॉर पर खुलकर बात की है. भंसाली की मानें तो लव एंड वॉर एक लव स्टोरी होने वाली है, जिसे वह लंबे समय बाद बनाने जा रहे हैं. भंसाली ने लव एंड वॉर पर बात करते हुए कहा– यह इस समय की कहानी होगी, जिसमें दर्शकों को डांस, पिल्लर्स, आर्किटेक्चर और ज्वेलरी जैसी कई चीजों से कुछ अलग देखने को मिलेगा. यह मेरे लिए एक नई भाषा है. संजय भंसाली ने साथ ही कहा– एक फिल्ममेकर के तौर पर मुझे कुछ नया करने, एक अलग अवधि, किरदारों के एक अलग सेट और नई परिस्थितियों के बारे में बात करने के लिए एक्साइट करने के लिए मुझे इसकी जरुरत थी. संजय लीला भंसाली ने तीनों लीड की कैमेस्ट्री पर भी बात की है. भंसाली ने बातचीत में कहा–रणबीर, विक्की और आलिया के साथ काम करना अच्छा एक्सपीरियंस है. ये देखना काफी मजेदार होगा कि इन तीनों की कैमेस्ट्री कैसे काम करती है. और एक ट्रायंएग्ल लव स्टोरी है, जो काफी समय से हिंदी सिनेमा में नहीं आई है. तो देखते हैं कि कैसे सब शेप लेता है. बता दें, भंसाली ने साल 2024 की शुरुआत में लव एंड वॉर की अनाउंसमेंट की थी और साथ ही रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल का नाम बतौर लीड भी रिवील किया था। संजय लीला भंसाली ने कहा– रणबीर, विक्की और आलिया के साथ काम करना अच्छा एक्सपीरियंस है. ये देखना काफी मजेदार होगा कि इन तीनों की कैमिस्ट्री कैसे काम करती है. इसके अलावा जो कहानी भंसाली इस फिल्म के जरिए पेश करने वाले हैं, वो पिछले कई सालों से हिंदी सिनेमा में देखने को नहीं मिली है. फिल्म को लेकर फिल्ममेकर काफी एक्साइटेड हैं. वहीं, रणबीर कपूर और आलिया भट्ट के साथ डायरेक्टर पहले भी काम कर चुके हैं। इस साल की शुरुआत में संजय लीला भंसाली ने सोशल मीडिया पर फिल्म के नाम का पोस्टर साझा कर 'लव एंड वॉर' का ऐलान किया था. ये फिल्म 2025 में क्रिसमस के मौके पर रिलीज होगी. ये पोस्टर साझा करते हुए संजय लीला भंसाली ने लिखा था, 'हम आपके सामने संजय लीला भंसाली की एपीक लव स्टोरी 'लव एंड वॉर' लेकर आ रहे हैं.' इस पोस्टर पर आलिया भट्ट, रणबीर कपूर और विक्की कौशल के साइन थे।

ऑल ब्लैक आउटफिट में काफी सिजलिंग लग रहीं अनन्या पांडे

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे हमेशा अपने बोल्ड लुक्स के कारण फैंस के बीच लाइमलाइट बटौरती रहती हैं एक्ट्रेस के इंस्टाग्राम पर तस्वीरें शेयर करते ही फैंस लाइक्स और कॉमेंट्स करते हुए नहीं थकते, हाल ही में अनन्या पांडे ने अपने लेटेस्ट हॉट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं इन तस्वीरों में उनका किलर अवतार देखकर फैंस दंग रह गए हैं इस तस्वीर में एक्ट्रेस काफी गॉर्जियस अंदाज में पोज देती हुई नजर आ रही हैं एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने ऑल ब्लैक आउटफिट पहना हुआ है बालों को खोलकर,कानों में इयररिंग्स और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस ने अपने लुक को कंप्लीट किया। एक्ट्रेस स्किन फिट जैगिंग्स पहनकर और साथ ही अपना परफेक्ट फिगर फ्लॉन्ट करते हुए नजर आ रही है अभिनेत्री सोशल मीडिया लवर है बता दें कि अनन्या पांडे इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव रहती हैं। एक्ट्रेस के चाहने वाले उनके हर एक स्टाइल को काफी फॉलो करते हैं।

कल्कि 2898 एडी' में प्रभास ने बुज्जी के राज से उठाया पर्दा, फिल्म में हुई पांचवें स्टार की एंट्री

साउथ एक्टर प्रभास की फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' का नया टीजर रिलीज किया गया है। इस मूवी में एक नया किरदार जोड़ा गया है, जिसकी झलक दिखाने के लिए एक इवेंट रखा गया था। बता दें फिल्म को भारी–भरकम बजट से तैयार किया गया है प्रभास के अलावा दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन और कमल हासन भी फिल्म में दिखाई देंगे हाल ही में हैदराबाद में एक ग्रैंड इवेंट हुआ, जहां फिल्म में पांचवें स्टार की एंट्री हो गई। इस साल की सबसे महंगी फिल्म का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है, नाग अश्विन की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' की रिलीज डेट पोस्टपोन हो गई थी। बता दें इस फिल्म को बनने में 600 करोड़ रुपये लगे। फिल्म को बड़े लेवल पर तैयार किया गया है यही वजह है कि इसे लोकसभा चुनाव के चलते 9 मई को पोस्टपोन कर दिया गया। 27 जून को रिलीज होने वाली इस मूवी का एक नया टीजर लॉन्च हुआ, जिसके लिए एक बड़ा इवेंट भी रखा गया। प्रभास ने इस इवेंट में ग्रैंड एंट्री मारी इसपर हर किसी की नजरें टिकी हुईं थी। दरअसल जिस कार को ड्राइव करते हुए वो दिखे हैं, उसका नाम है बुज्जी इस इवेंट के तमाम वीडियो शेयर भी किए जा रहे हैं। वीडियो की शुरुआत होती है एक आवाज के साथ, इसमें सुनाई देता है कि, ये मिशन मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है भैरवा। तभी स्क्रीन पर रोबोट सी दिखने वाली एक डिवाइस की एंट्री हो जाती है आगे वीडियो में देखा गया कि, प्रभास इसे जल्दी कार चलाने के लिए कमांड देते नजर आ रहे हैं इसका मतलब बुज्जी सिर्फ कार नहीं है बल्कि रोबोट वाली कार है जो उनकी फिल्म में मदद करती नजर आएगी। फिर प्रभास उस कार में सवार होते हैं और बुज्जी से उसकी स्पीड तेज करने के लिए कहते हैं। लेकिन बुज्जी कहती है कि ये एकदम मैक्सिम स्पीड है। फिर बुज्जी भैरव से उन्हें इस मिशन में शामिल न होने को कहती हैं तो भैरव उनसे एक दिन के लिए पॉजिटिव रहने की अपील करते हैं। वह मिशन से वापस जाने का भी बोलती है। लेकिन प्रभास तैयार नहीं होते और ऐसा करने के लिए मना करते हैं। अंत में प्रभास लव यू बुज्जी कहते हैं और बुज्जी कहती हैं– ठीक है।

डिहाइड्रेशन के चलते बॉलीवुड स्टार शाहरुख खान अहमदाबाद के हॉस्पिटल में भर्ती

बॉलीवुड के मेगास्टार शाहरुख खान की तबीयत खराब होने के चलते उन्हें अहमदाबाद के केडी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि डिहाइड्रेशन और खांसी के चलते अभिनेता को हॉस्पिटल में भर्ती कराना पड़ा। डॉक्टरों ने बताया कि शाहरुख खान को अंडर ऑब्जर्वेशन के लिए रखा गया है। आज (बुधवार) शाम 4 बजे के बाद शाहरुख खान को हॉस्पिटल लाया गया था। बॉलीवुड स्टार आईपीएल 2024 क्वालिफायर 1 में अपनी टीम केकेआर को सपोर्ट करने के लिए अहमदाबाद में थे। इस दौरान वह अहमदाबाद के आईटीसी नर्मदा होटल में रुके हुए थे। फिलहाल हॉस्पिटल की ओर से कहा जा रहा है कि उनकी तबियत अब ठीक है।

कृति सेनन ने बॉलीवुड में पूरे किए 10 साल, इंस्टाग्राम पर शेयर की भावुक पोस्ट

ठीक 10 साल पहले राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री कृति सेनन ने फिल्म श्हीरोपंतीश से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। शब्बीर खान द्वारा निर्देशित इस फिल्म में कृति ने डिंपी का किरदार निभाकर खूब तारीफें बटोरीं। आज इस फिल्म को ही नहीं बल्कि कृति को इंडस्ट्री में 10 साल पूरे हो गए हैं। बॉलीवुड में एक दशक पूरा करने पर एक्टर ने सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट शेयर किया है। इंस्टाग्राम वीडियो में दिखाया गया है कि वह एक अभिनेत्री बनने के लिए कितनी बेताब थी, उन्होंने अपने सपनों को पूरा करने के लिए कितनी मेहनत की है और सफलता की सीढ़ी चढ़ने के लिए क्या करना पड़ता है। वीडियो के साथ कृति सेनन ने कैप्शन में लिखा, ''मुझे हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू किए हुए 10 साल हो गए हैं. मेरी जिंदगी का सबसे अच्छा और सबसे जादुई दशक. ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो जब मैंने फिल्म में कदम रखा था. ष''पहली बार सेट किया गया और मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे यहीं होना चाहिए था।'' कृति सेनन ने आगे लिखा, ''मैंने बहुत कुछ सीखा है, बड़ा हुआ हूं और एक अभिनेता और एक इंसान के रूप में विकसित हुआ हूं। कुछ प्यारे दोस्तों से मुलाकात की, और सुंदर समीकरण और यादें बनाईं जो हमेशा मेरे चेहरे पर मुस्कान लाएंगी। मेरी यात्रा के लिए मैं आभारी हूं।'' हर कोई जो इसका हिस्सा रहा है, उसने मेरा समर्थन किया, मुझ पर भरोसा दिखाया, मुझे सिखाया और कुछ दूरी तक मेरे साथ चला।''

काम के मोर्चे पर

कृति सेनन आखिरी बार करीना कपूर खान और तब्बू के साथ क्रू में नजर आई थीं। वह अब निर्माता के रूप में अपनी पहली फिल्म की रिलीज की तैयारी कर रही हैं। कृति की होम प्रोडक्शन ब्लू बटरफ्लाई फिल्म्स नेटफ्लिक्स पर अपनी पहली फिल्म रिलीज कर रही है। तीन पत्ती नाम की इस फिल्म में काजोल और कृति मुख्य भूमिका में हैं। सैट प्लस महाभारत में अर्जुन की पौराणिक भूमिका के लिए जाने जाने वाले टीवी अभिनेता तीन पत्ती से बॉलीवुड में डेब्यू कर रहे हैं।

सावधान! बीमारियों का घर है कैमिकल वाले आम, ऐसे करें पहचान

आम को फलों का राजा कहा जाता है, क्योंकि यह बेहद लजीज होने के साथ–साथ पोष्टिक तत्वों से भरपूर भी होता है। इन दिनों बाजार में खूब आम देखने को भी मिल रहे हैं। ऐसे बहुत कम लोग होंगे जिन्हें यह फल स्वादिष्ट ना लगता हो। इसके सेवन मात्र से ही कई तरह की खतरनाक बीमारियों से बचा जा सकता है, लेकिन क्या आप जानते हैं की कभी– कभी यही फल हमारी सेहत को बहुत नुकसान भी पहुंचा सकता है। दरअसल, आज कल हर एक चीज मिलावटी या नकली मिलने लगी है और उन में से एक आम भी है। ऐसे में आप इन्हें देखकर पता नहीं लगा सकते की यह असली आम नहीं हैं। इन्हें समय से पहले पकाने के लिए कैल्शियम कार्बाइड का यूज किया जाता है जो हमारी सेहत के लिए बहुत हानिकारक होता है। सिर्फ इस वजह से ही एफएसएसआई ने इस पर बैन भी लगाया हुआ है। इसी के साथ चलिए हम आपको विस्तार से बताते हैं कि कैल्शियम कार्बाइड क्या होता है, इसके नुकसान और किस तरह आप आम को साफ कर सकते हैं।

क्या है कैल्शियम कार्बाइड?

यह एक तरह का केमिकल होता है जो फलों को जल्द पकाने के लिए यूज किया जाता है। ये केमिकल फल को समय से पहले पका तो देता है लेकिन फलों में नमी को सूखाकर उनमें एसिटिलीन नाम की गैस को बना देता है। सिर्फ यही नहीं बल्कि एसिटघ्लीन गैस में आर्सेनिक और फास्फोरस जैसे हानिकारक अंश भी मौजूद होते हैं, जो सेहत के लघ्एि जहर समान होते हैं।

कैल्शियम कार्बाइड के नुकसान

– बार–बार प्यास लगना
– चक्कर आना
– कमजोरी आना
– खाना निगलने में कठिनाई होना
– लिवर और किघ्डनी की बीमारी का खतरा
– इस केमिकल का सेवन अगर आप लंबे समय से करते आ रहें हैं तो से कैंसर का खतरा होने का भी खतरा बढ़ जाता है।

इस तरह करें आम को साफ और इसकी पहचान

आप सबसे पहले जब भी आम खरीद कर लाते हैं तो उसे अच्छी तरह पानी से धोकर साफ करें और आम को पानी में कुछ समय के लिए डुबोकर रखें। जहां से आप आम खरीदकर ला रहे हैं वो अगर जल्दी खराब हो रहे हैं तो यह केमिकल्स की वजह से हो सकता है।

बार–बार कूकिंग ऑयल को गर्म करने से बढ़ सकता है कैंसर का खतरा, ICMR ने बताया कैसे रीयूज करें

आईसीएमआर (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) ने हाल ही में जारी किए दिशानिर्देशों में कहा है कि, कूकिंग तेल या फैट्स को श्बार–बार गर्म करनेश के प्रति सावधानी बरतने की सलाह दी है। प्ड्डत ने कहा कि वनस्पति तेलों को बार–बार गर्म करने से जहरीले यौगिक उत्पन्न हो सकते हैं जो हृदय रोगों और कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं।

कूकिंग ऑयल के बार–बार यूज से क्यों बढ़ता है कैंसर का जोखिम?

दरअसल, कूकिंग तेल को बार–बार गर्म करने से जहरीले यौगिक उत्पन्न हो सकते हैं जो हृदय रोगों और कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं। पिछले अध्ययनों से यह भी पता चला है कि कैसे खाना पकाने के तेल को दोबारा गर्म करने से विषाक्त पदार्थ निकल सकते हैं और शरीर में मुक्त कण भी बढ़ सकते हैं, जिससे सूजन और विभिन्न पुरानी बीमारियां हो सकती हैं।

बार–बार तेल गर्म करने से कैंसर और हृदय रोग होता है

दिशानिर्देशों में कहा गया है कि खाना पकाने के लिए वनस्पति तेलों का श्पुनरू उपयोगश करने की प्रथा घरों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों दोनों में बहुत आम है और बताया गया है कि यह कैसे हानिकारक यौगिकों को छोड़ सकता है जो चिंताजनक स्वास्थ्य स्थितियों को जन्म दे सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है, वनस्पति तेल/वसा को बार–बार गर्म करने से पीयूएफए का ऑक्सीकरण होता है, जिससे ऐसे यौगिकों का निर्माण होता है जो हानिकारक/विषाक्त होते हैं और हृदय रोगों और कैंसर के खतरे को बढ़ा सकते हैं।

कूकिंग ऑयल का रीयूज कैसे करें

आईसीएमआर के अनुसार, कूकिंग का रीयूज एक से दो दिन के अंदर हो जाना चाहिए। लेकिन, तेल का दोबारा उपयोग तलने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इससे आपकी सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है। वहीं, आप तड़का लगाने के लिए तेल का दोबारा इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन इसका रीयूज 1–2 दिनों के भीतर ही कर देना चाहिए। ध्यान रखें कि लंबे समय के बाद तेल का रीयूज नहीं करना चाहिए।

क्या डरावने सपनों के कारण नहीं सो पाते आप? तो हो सकती है ये गंभीर बीमारी

बुरे ख्याब अप्रिय होते हैं, लेकिन अधिकांश लोगों के लिए बिल्कुल सामान्य होते हैं। हाल ही में पाया गया कि यह बुरे सपने ल्यूपस जैसी ऑटोइम्यून बीमारियों के आने का संकेत भी हो सकते हैं। द लैंसेट के ईक्लिनिकलमेडिसिन जर्नल में प्रकाशित अध्ययन ने ऑटोइम्यून बीमारी के विकसित होने के संभावित शुरुआती चेतावनी संकेतों का पता लगाया। इस दौरान ल्यूपस के 676 रोगियों और 400 डॉक्टरों का सर्वेक्षण किया गया और 100 से अधिक गहन साक्षात्कार किए।

ये है इस बीमारी के लक्षण

इस दौरान मरीजों से अनुभव होने वाले न्यूरोलॉजिकल और मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों के बारे में पूछा, और उनकी बीमारी पहली बार कब शुरू हुई, इसके संबंध में उन्हें कब आभास हुआ। इसमें खराब मूड, मतिभ्रम, कंपकंपी और थकान जैसे लक्षण शामिल थे। कई मरीज उन लक्षणों का वर्णन कर सकते हैं जो उनके गंभीर होने से ठीक पहले हुए थे। हालांकि अलग–अलग लोगों के बीच पैटर्न अलग–अलग होते हैं, वे अक्सर प्रत्येक व्यक्ति के लक्षण गंभीर होने पर समान होते हैं। मरीजों को अक्सर पता होता था कि कौन से लक्षण इस बात का संकेत हैं कि उनकी बीमारी बदतर होने वाली है। ऑटोइम्यून बीमारियों से पहले आने वाले बुरे सपने अन्य न्यूरोलॉजिकल बीमारियों में भी पाए गए हैं।

बीमारी के बढ़ने से पहले आते हैं सपने

अध्ययन में लक्षण बढ़ने से संबंधित दुःस्वप्नों के वर्णन में अक्सर हमला होना, कहीं फंस जाना, कुचल जाना या गिर जाना शामिल होता है। कई लोगों के यह अनुभव बहुत परेशान करने वाले थे। एक व्यक्ति ने उनका वर्णन इस प्रकार किया–भयानक, हत्याओं जैसा, लोगों की खाल उतरने जैसा, भयावह। एक और महत्वपूर्ण खोज यह थी कि ये बुरे सपने अक्सर किसी बीमारी के बिगड़ने से पहले आते थे, खासकर उन लोगों में जिनके रोग पैटर्न के हिस्से के रूप में मतिभ्रम होता था। प्रदाह संबंधी गठिया जैसी अन्य रुमेटोलॉजिकल बीमारियों की तुलना में ल्यूपस वाले लोगों में इसकी संभावना अधिक थी। यह अप्रत्याशित नहीं था क्योंकि ल्यूपस कुछ मामलों में मस्तिष्क को प्रभावित करने के लिए जाना जाता है। मतिभ्रम की रिपोर्ट करने वाले रोगियों में से, ल्यूपस के 61% रोगियों और अन्य ऑटोइम्यून रुमेटोलॉजिकल रोगों से पीड़ित 34% ने मतिभ्रम से ठीक पहले नींद में व्यवध ाान (ज्यादातर बुरे सपने) बढ़ने की सूचना दी।

दिवास्वप्न

पिछले अध्ययन में पाया गया कि 50: से अधिक लोग अपने डॉक्टरों को मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों के बारे में शायद ही कभी या कभी नहीं बताते हैं। हालांकि लोग अक्सर अपने डॉक्टरों की तुलना मेंसाक्षात्कारकर्ताओं के साथ बात करने में अधिक सहज होते थे,। ल्यूपस और अन्य ऑटोइम्यून बीमारियों से पीड़ित कई लोगों को निदान के लिए लंबी और कठिन यात्रा करनी पड़ सकती है। इन रोगियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले लक्षणों की विस्तृत श्रृंखला और प्रकार की अधिक समझ से सही निदान और बेहतर उपचार हो सकता है। जिन लोगों में ऑटोइम्यून बीमारी के पहले लक्षण मनोरोग संबंधी होते हैं, उनमें विशेष रूप से गलत निदान और दुर्व्यवहार की संभावना होती है, जैसा कि इस रुमेटोलॉजी नर्स ने समझायारू मैंने देखा है कि रोगियों को मनोविकृति के एक घटनाक्रम के लिए भर्ती कराया गया था और ल्यूपस की जांच तब तक नहीं की जाती जब तक कोई यह नहीं कहता, श्ओह, मुझे आश्चर्य है कि क्या यह ल्यूपस हो सकता है... लेकिन यह कई महीनों का था और बहुत मुश्किल था... विशेष रूप से युवा महिलाओं के साथ और यह और अधिक सीख रहा है कि ल्यूपस कुछ लोगों को इसी तरह प्रभावित करता है और यह एंटीसाइकोटिक दवाएं नहीं हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है, यह बहुत सारे स्टेरॉयड की तरह है।

ल्यूपस ने समझाया

डॉक्टरों के पास भी समय की कमी है, खासकर ल्यूपस जैसी जटिल बीमारियों के लिए जो शरीर के किसी भी अंग को प्रभावित कर सकती हैं। हमारे द्वारा साक्षात्कार किए गए एक रुमेटोलॉजिस्ट ने कहा कि इन लक्षणों पर चर्चा करना प्राथमिकता नहीं थी। अध्ययन में अधिकांश डॉक्टरों ने कहा कि वे अब बुरे सपने और अन्य लक्षणों के बारे में पूछना शुरू करेंगे। कई लोगों ने शोधकर्ताओं को बताया कि उनके मरीज अब नियमित रूप से इन लक्षणों की रिपोर्ट कर रहे हैं और इससे उनकी बीमारी की निगरानी में मदद मिल रही है। बुरे सपने जैसे लक्षण निदान सूची में नहीं हैं, इसलिए मरीज और डॉक्टर अक्सर उन पर चर्चा नहीं करते हैं। बीमारियों का निदान करने के लिए डॉक्टर के अवलोकन, रक्त परीक्षण और मस्तिष्क स्कैन पर भरोसा करना उन लक्षणों के लिए काम नहीं करता है जो अदृश्य हैं और अभी तक नहीं हैं–और परीक्षण पर कभी भी दिखाई नहीं दे सकते हैं। हमारा अध्ययन इन अक्सर परेशान करने वाले लक्षणों की पहचान, निगरानी और उपचार में डॉक्टर–रोगी टीम वर्क के महत्व पर भी प्रकाश डालता है।

आपकी सेहत को फायदे की जगह नुकसान पहुंचा सकती है इंटरमिटेंड फास्टिंग, जानिए कारण

आज के समय में हर महिला अपनी फिटनेस पर काफी ध्यान देती हैं। हर महिला वजन को कम करने या मेंटेन करने की कोशिश करने में लगी रहती हैं। क्योंकि सभी महिलाएं अपने फिगर को फिट रखकर खूबसूरत दिखना चाहती हैं। जिसके लिए वह एक्सरसाइज, योग, वेट लॉस डाइट और वॉक जैसी गतिविधियां अपने लाइफस्टाइल में शामिल करती हैं। बता दें कि वेट लॉस के कई अन्य तरीके भी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इनमें से एक तरीका इंटरमिटेंट फास्टिंग का है। महिलाओं के लिए वेट लॉस की जर्नी में महिलाओं के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग सबसे शानदार तरीकों में से एक है। इस दौरान आपको एक समय तक उपवास रखना होता है। इस फास्टिंग के दौरान आपको हेल्दी या अनहेल्दी खाने से भी परहेज करना पड़ता है। इस फास्टिंग को फॉलो करने के दौरान महिलाएं अधिकतर या तो सुबह का ब्रेकफास्ट स्किप करती हैं, या फिर रात का डिनर स्किप करती हैं। इस दौरान पूरे दिन में सिर्फ एक बार खाना होता है। बता दें कि यह जरूरी नहीं है कि इंटरमिटेंट फास्टिंग की सहायता से हर महिला अपना वेट कम कर सके। ऐसे में अगर आप भी खुद को फिट रखने के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग करना चाहती हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि किन महिलाओं को इंटरमिटेंट फास्टिंग फॉलो करने से बचना चाहिए।

तनाव और वर्कलोड से परेशान

अगर आपकी लाइफ में ऑफिस का वर्क लोड ज्यादा है, या फिर आप घर और ऑफिस के बीच शारीरिक और मानसिक रूप से थक जाती हैं। तो आपको इस तरह की फास्टिंग से बचना चाहिए।

ब्रेकफास्ट स्किप न करना

अगर आप भी उन महिलाओं में शामिल हैं, जो सुबह का नाश्ता करना स्किप नहीं करती हैं। या फिर नाश्ता न करने से आपको कमजोरी व चक्कर आने लगते हैं। तो आपको वेट लॉस के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग का ऑप्शन नहीं चुनना चाहिए।

जंक फूड की शौकीन

अगर आप 16 घंटे की इंटरमिटेंट फास्टिंग के बाद जंक फूड, तला–भुना और अनहेल्दी फूड खाना पसंद करती हैं। तो इंटरमिटेंट फास्टिंग से आपका वेट लॉस नहीं होगा। इसलिए यदि आपको भी जंक फूड का शौक है, तो आपको वेट लॉस के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग का ऑप्शन नहीं चुनना चाहिए। बता दें कि अगर इंटरमिटेंट फास्टिंग की सहायता से आप भी वेट लॉस करना चाहती हैं, तो आपको जंक फूड, अनहेल्दी फूड और तनाव से दूरी बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

सनशाइन कोल्ड ब्रू कॉफी के साथ करें अपने दिन की शुरूआत, पूरा दिन एनर्जी से रहेंगे भरपूर

सोमवार को सभी लोगों को एक एनर्जी की जरूरत होती हैं। इसके लिए आप बूस्टर ड्रिंक का सेवन कर सकते हैं। बूस्टर ड्रिंक सिर्फ एक पेय पदार्थ नहीं होता है, बल्कि यह सप्ताह के पहले दिन की थकावट वाले प्रभाव को कम करने के लिए स्वादों का एक मिश्रण होता है। खुद को एनर्जेटिक फील करवाने के लिए आप भी बूस्टर ड्रिंक के तौर पर कोल्ड ब्रू कॉफी का सेवन कर सकते हैं।

अगर आप भी खुद के लिए ताज़गी भरे पिक–मी–अप की चाहत रखते हैं। तो सोमवार की शाम को सनशाइन कोल्ड ब्रू को अपना साथी बना सकते हैं। आज हम आपके साथ इस आर्टिकल के जरिए घर पर आसानी से बनने वाली और स्वाद से भरपूर सनशाइन कोल्ड ब्रू रेसिपी शेयर करने जा रहे हैं।

सामग्री

कोल्ड ब्रू कॉफी– 240 मिली
संतरे का रस– 120 मिली
अनानास का रस– 60 मिली
ग्रेनेडिन सिरप– 15 मिली
बर्फ के टुकड़े
गार्निश के लिए माराशिनो चेरी
गार्निश के लिए संतरे के टुकड़े

ऐसे बनाएं

सबसे पहले सर्विंग गिलास को बर्फ के टुकड़ों से भर लें।

इसके बाद एक बाउल में कोल्ड ब्रू कॉफी, संतरे का रस और अनानास का रस मिलाएं। इन सबको अच्छे से मिक्स कर लें।

अब सभी गिलास में चम्मच के पीछे 15 मिलीलीटर ग्रेनाडीन सिरप डालें। जिससे यह नीचे तक डूब जाए और क्रमिक प्रभाव पैदा करें।

फिर हर गिलास में ग्रेनाडीन परत के ऊपर कोल्ड ब्रू कॉफी के मिश्रण को बेहद सावधानी से डालें।

सभी गिलास को संतरे के टुकड़े और एक माराशिनो चेरी से सजाएं।

इस तरह से सनशाइन कोल्ड ब्रू एनर्जी ड्रिंक बनकर तैयार हो जाएगी।

इस तरह से आप भी ताज़ा ईस्टर सनराइज कोल्ड ब्रू मॉकटेल का आनंद ले सकते हैं।

लखनऊ वासियों को देश के कोने कोने से आए आमों का मिलेगा मजा मैंगो

बंगनपल्ली, अल्फांजो, तोतापुरी, सिंधुरा, मल्लिका, राम केला आम मैंगो फेस्ट को बनाएंगे खास

लखनऊ, एजेंसी। लखनऊ में फलों के राजा आम की प्रदर्शनी का आगाज हो गया है इस चिलचिलाती गर्मी में लखनऊवासियों के लिए राहत के आम लखनऊ में आ गए है जी हां फन रिपब्लिक मॉल में 24 मई से 26 मई तक मैंगो फेस्टिवल की शुरुआत हो चुकी है। मास्टर शेफ के फाइनलिस्ट सचिन खतवानी 24 मई को मैंगो फेस्ट का उद्घाटन किया उनके साथ शेफ

नंदिनी मोतियानी भी मौजूद रहीं। गर्मी की छुट्टियों की शुरुआत हो चुकी है ऐसे में पैरेंट्स के लिए बच्चों का मनोरंजन करना जरूरी हो जाता है। उनकी यह चिंता 24 मई से 26 मई तक मैंगो फेस्ट मैंगो फेस्ट के जरिए दूर हो जाएगी जिसमें में ग्राहक आम खाएंगे और खरीदेंगे भी। इस मैंगो फेस्ट में तीस प्रकार के आमों की खास वैरायटी मौजूद है। जिसमे बंगनपल्ली, अल्फांजो, तोतापुरी, सिंधुरा, मल्लिका, राम केला, लंगड़ा, चौसा, थूरू, सफेदा, केसर, दशहरी इत्यादि किस्म के आम मौजूद रहेंगे। जिसे ग्राहक देखने के साथ साथ खरीद भी सकेंगे। 25 मई को किड्स फैंसी ड्रेस कंपटीशन जबकि 26 मई यानी अंतिम दिन वूमेन कोल्ड कुकिंग कंपटीशन भी होगा। मैंगो फेस्टिवल के साथ साथ विभिन्न प्रकार की अलग अलग प्रतियोगिताएं ग्राहकों का उत्साह बढ़ाने के साथ साथ उनका मनोरंजन भी करेंगी। फन रिपब्लिक मॉल की मार्केटिंग मैनेजर प्रीति पांडे ने कहा कि इस गर्मी फलों का राजा आम लखनऊवासियों को ठंड का एहसास कराएगा। हमने देश के कोने कोने से भिन्न भिन्न प्रकार के आमों को मैंगो फेस्ट में लाने का प्रयास किया है। ताकि ग्राहकों को कुछ नया देखने को मिले। 30 प्रकार के आमों की अलग अलग प्रजातियों के आम हम इस फेस्टिवल में लेके आए हैं ताकि ग्राहक सभी प्रकार के आमों का लुफ्त उठा सकें।

हवाओं के चलते मिली गर्मी से राहत, दो दिन बाद फिर 4 डिग्री तक बढ़ेगा पारा

लखनऊ, एजेंसी। लखनऊ में पिछले दिनों पड़ी उमस और भीषण गर्मी से लोगों को राहत मिली है। अब तापमान 40 डिग्री से नीचे है। आज अधिकतम तापमान 39 डिग्री और न्यूनतम तापमान 29 डिग्री दर्ज किया जाएगा। सुबह से 20 से 30 किलोमीटर की रफ्तार से तेज हवाएं चल रही हैं। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह का कहना है कि, तेज हवा से धूप की राहत मिली है। दो दिन तक मौसम ऐसा ही रहेगा। इसके बाद तापमान फिर से कुछ दिनों तक 40 डिग्री के ऊपर दर्ज किया जाएगा। इस दौरान अधिकतम तापमान 43 डिग्री तक दर्ज होने का अनुमान है। मौसम विभाग ने उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में अगले 5 दिन बाद लू का रेड अलर्ट जारी किया है। यूपी में गर्मी अभी और बढ़ेगी। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी जिलों में दिन ही नहीं बल्कि रातें भी तपेंगी। मौसम विभाग ने 26 और 27 मई के दौरान पश्चिमी यूपी में हीट वेव पड़ने का रेड अलर्ट जारी किया है। अगले 48 घंटों के बाद प्रदेश के विभिन्न अंचलों में दिन के तापमान में दो से चार डिग्री बढ़ने का अनुमान है। वहीं, 24 और 25 मई के दौरान पश्चिमी उत्तर प्रदेश और पूर्वी जिलों के लिए गर्मी का आरेंज अलर्ट जारी हुआ है। दिन का तापमान 40 डिग्री के आसपास पहुंच रहा है, लेकिन रात का तापमान भी लखनऊ में 30 डिग्री तक दर्ज हो रहा है। बढ़ी गर्मी और उमस लोगों को ठीक से सोने नहीं दे रही है। गर्मी अधिक पड़ने से कूलर और पंखे नाकाफी साबित हो रहे। वहीं, दिन में सड़क पर आवाजाही करने वाले लोग जरूरी उपाय कर के ही घर से बाहर निकल रहे हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा, विश्वनाथ चारिआलि का शपथग्रहण

विश्वनाथ,असम। विश्वनाथ चारिआलि शहर के राष्ट्रीय मार्ग में स्थित रोयल प्लेज होटल के सभागार में संध्या 6:30 बजे मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा, विश्वनाथ चारिआलि का शपथग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस शपथग्रहण समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन प्रांतीय अध्यक्ष सुशील गोलछा के कर कमलों से हुआ । जिसमें गरिमामयी समारोह में अतिथि के रूप में मारवाड़ी सम्मेलन तेजपुर से मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष सुशील गोलछा, तेजपुर शाखा के उपाध्यक्ष घनश्याम सोमानी, तेजपुर शाखा के सचिव राजीव जैन ,मारवाड़ी सम्मेलन विश्वनाथ चारिआली शाखा के अध्यक्ष छत्तर सिंह पवार, उपाध्यक्ष दिलीप शर्मा, सह सचिव जय गोयनका, शिक्षक संतोष कुमार महतो मौजूद थे ।सर्वप्रथम प्रांतीय अध्यक्ष सुशील गोलछा के अध्यक्षता में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह का संचालन मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा के सचिव शिल्पी गोयनका ने किस। इसके बाद अतिथियों को मारवाड़ी दुप्पटा (शॉल) से अभिनंदन किया गया। तेजपुर शाखा के उपाध्यक्ष घनश्याम सोमानी ने क्रमशः महिला शाखा के अध्यक्ष किरन भरतीया , उपाध्यक्षा अंकिता शर्मा, सचिव शिल्पी गोयनका, सह सचिव नीलू शर्मा,कोषाध्यक्ष सुनीता पटवारी, कार्यकारी सदस्या प्रेम जैन, शांति जैन, निलम अग्रवाल, संगीता पटवारी, मीनू अग्रवाल, नेहा पंवार, रजनी पारिक, ऊषा तायल, पिंकी अग्रवाल, सोनिया अग्रवाल, कुसुम अग्रवाल, किरण शर्मा ,सलाहकार ज्योति भूत, ऊषा तापड़िया को शपथ दिलाई। उपस्थित पदाधिकारी ने समाज के साथ महिला उत्थान सर्वोपरी मानते हुए अपना लक्ष्य निर्धारित करने का आशा व्यक्त की। साथ ही शपथ ग्रहण लिये पदाधिकारी को सम्मेलन ज्यादा से ज्यादा महिला जोड़ने पर बल दिया। अंत में शपथग्रहण समारोह राष्ट्रगान से संपन्न हुई।

धर्म के आधार पर आरक्षण देने वालों को बेनकाब करना जरूरी : योगी

बोले- ममता सरकार ने पार की राजनीतिक तुष्टिकरण की पराकाष्ठा

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ओबीसी–मुस्लिम आरक्षण को लेकर आए कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान किसी को भी धर्म के आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं देता है। पश्चिम बंगाल की टीएमसी सरकार ने राजनीतिक तुष्टिकरण की पराकाष्ठा पर चलते हुए 2010 में 118 मुस्लिम जातियों को जबरन ओबीसी में डाल कर ये आरक्षण दिया था। इंडी गठबंधन द्वारा देश की कीमत पर राजनीति की जो ये नीति चल रही है, इस होड़ को खारिज और बेनकाब किया जाना चाहिए। सीएम योगी शुक्रवार को अपने सरकारी आवास पर मीडिया से बातचीत

के दौरान ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ओबीसी का हक जबरदस्ती हड़प रही थीं। इसी असंवैधानिक कृत्य पर माननीय उच्च न्यायालय ने टीएमसी सरकार के फैसले को पलटा है और एक जोरदार तमाचा मारा है। यह कार्य असंवैधानिक था, इसे अनुमति नहीं दी जा सकती है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा में इसे बार बार कहा था। उन्होंने बताया कि भारत में अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए और मंडल कमीशन के बाद ओबीसी की सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को ध्यान में रखते हुए आरक्षण की व्यवस्था की गई थी। धर्म के आधार पर आरक्षण की इजाजत भारत का संविधान कभी नहीं देता। बाबा साहब ने इसके लिए बार बार देश को आगाह किया था कि धर्म के आधार पर देश का विभाजन हुआ था और हमें ऐसी कोई स्थिति नहीं पैदा करना चाहिए जो देश को विभाजन की ओर धकेले। मुख्यमंत्री ने कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले को नजीर बताते हुए कहा कि कर्नाटक के अंदर भी कांग्रेस सरकार ने ओबीसी के अधिकार पर इसी प्रकार की सेंधमारी करते हुए मुसलमानों को आरक्षण देने का काम किया है। साथ ही आंध्र प्रदेश में भी इसी प्रकार की शरारत की गई थी। इन सबका जोरदार विरोध करना जरूरी है। किसी भी उसंवैधानिक कार्य को, जो भारत के विभाजन की आधारशिला रखने वाला हो, भारत को कमजोर करने वाला हो उसे कतई स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

डुमरियागंज: बड़ी कठिन है दिल्ली की राह

लखनऊ, एजेंसी। 15 साल पहले कांग्रेस के टिकट पर सांसद चुने गए जगदंबिका पाल फिर डुमरियागंज से मैदान में हैं। 2014 में पंजा से हाथ छुड़ाकर कमल का दामन थामा था। इस सीट से 3 बार सांसद चुने जा चुके हैं। वो इस बार इस कोशिश में होंगे कि जीत का सिलसिला यूं ही जारी रखा जाए। उनकी राह आसान नहीं है, इस सीट से छह उम्मीदवार मैदान में हैं। तीन बार से डुमरियागंज के सांसद चुने जा रहे जगदंबिका पाल का मुकाबला इस बार समाजवादी पार्टी के भीष्म शंकर तिवारी से है। बसपा ने मोहम्मद नदीम को उम्मीदवार बनाया है।डुमरियागंज से मैदान में जगदंबिका पाल भाजपा भीष्म शंकर तिवारी समाजवादी पार्टी मो. नदीम बहुजन समाज पार्टी अमर सिंह चौधरी एएसपी केआर नौशाद आलम पीस पार्टी किरण देवी निर्दलीय उम्मीदवार हैं। लोकसभा चुनाव 2019 का परिणाम, पिछले चुनाव में सपा और बसपा ने साथ मिलकर चुनाव लड़ा था तो भी जगदंबिका पाल ने आसानी से जीत हासिल कर ली थी। ऐसे में इस बार भी उनकी मुश्किलों में ज्यादा इजाफा होता नजर नहीं आ रहा है।भाजपा जगदंबिका पाल 492,253 बसपा आफताब आलम 3,86,932 कांग्रेस सिकंदर अली जलालुद्दीन 60,549 मत पाए थे।डुमरियागंज लोकसभा सीट पर सात बार कांग्रेस पार्टी का कब्जा रहा है। जबकि एक बार भारतीय जनसंघ, एक बार जनता दल और एक बार ही जनता पार्टी ने चुनाव जीता है। पांच बार भाजपा उम्मीदवार को जीत हासिल हुई है। समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को एक बार जीत नसीब हुई है। इस क्षेत्र के पहले सांसद केशव देव मालवीय चुने गए थे। यदि जगदंबिका इस बार चुनाव जीतते हैं को सबसे अधिक बार सांसद चुने जाने का रिकॉर्ड बना लेंगे।

उनके अलावा भाजपा के ही रामपाल सिंह यहां से तीन बार सांसद चुने जा चुके हैं। डुमरियागंज में क्रमशः सांसद बने 1952 केशव देव मालवीय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1957राम शंकर लाल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस1962 कृपा शंकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1967नारायण स्वरूप शर्मा भारतीय जनसंघ 1971केशव देव मालवीय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1977 माधव प्रसाद त्रिपाठी जनता पार्टी 1980 काजी जलील अब्बासी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1984काजी जलील अब्बासी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1989 बृजभूषण तिवारी जनता दल1991 रामपाल सिंह भारतीय जनता पार्टी1996 बृजभूषण तिवारी समाजवादी पार्टी 1998 रामपाल सिंह भारतीय जनता पार्टी1999 रामपाल सिंह भारतीय जनता पार्टी 2004 मोहम्मद मुकीम बहुजन समाज पार्टी2009 जगदंबिका पाल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,2014 जगदंबिका पालभारतीय जनता पार्टी2019जगदंबिका पाल भारतीय जनता पार्टी। उत्तर प्रदेश की डुमरियागंज सीट पर छठे चरण में 25 मई को मतदान होने हैं। देखना होगा कि जगदंबिका पाल इस सीट बचा पाते हैं या नहीं। देशभर में 7 चरणों में हो रहे लोकसभा के लिए अंतिम चरण की वोटिंग 1 जून को होगी, जिसके बाद 4 जून को चुनावी नतीजे सामने आएंगे।

अम्बेडकर नगर : सपा और भाजपा में कड़ा मुकाबला

- अनुसूचित जाति के मतदाता निर्णायक
- बीएसपी कुछ खास गुल खिलाने से रही

लखनऊ, एजेंसी। अम्बेडकर लोकसभा सीट में भी लड़ाई बड़ी रोमांचक है। यहाँ ज्यादातर उम्मीदवार मूलरूप से बसपा की पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखते हैं। ए बात और है कि आज कोई साइकिल पर सवार होकर चुनावी रेस में है तो कोई कमल का फूल लेकर मैदान में डटा है। अंबेडकर नगर 1995 में जिला बना, उस समय मायावती मुख्यमंत्री थीं।2009 में परिसीमन हुआ और अंबेडकरनगर लोकसभा सीट अस्तित्व में आई जो अब अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित नहीं है।यह सीट बहुजन समाज पार्टी का गढ़ मानी जाती रही है। मायावती यहाँ से तीन बार जीतकर संसद तक पहुँची। भाजपा के उम्मीदवार रितेश पांडेय हैं जो 2019 में भी यहाँ से चुनाव जीते थे लेकिन बसपा के उम्मीदवार के तौर पर। इस सीट पर दो और प्रमुख उम्मीदवार सपा के लालजी वर्मा और बसपा के कमर हयात हैं। लखनऊ से पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे के जरिए हम जिले में प्रवेश करते हैं तो सबसे पहले महरूआ बाजार चौराहा पड़ता है, महरूआ बाजार अंबेडकर नगर लोकसभा क्षेत्र के कटेहरी विधानसभा के अंतर्गत आता है।लोकसभा चुनाव में इस बार सपा के प्रत्याशी लालजी वर्मा इसी विधानसभा सीट से विधायक हैं। सपा और भाजपा प्रत्याशी के बारे में लोगों का कहना है कि दोनों पहले बसपाई थे अब सपा और भाजपा से चुनाव लड़ रहे हैं।पुराना नेता होने की वजह से जनाधार लालजी वर्मा का ज्यादा मजबूत है लेकिन राम मंदिर बनने के कारण और मोदी की वजह से भाजपा का कद बढ़ गया है। जमीनी हकीकत में लालजी वर्मा का पब्लिक कनेक्शन ज्यादा है। सपा प्रत्याशी लालजी वर्मा भाषण में बीजेपी पर हमले करते हैं। वे कहते हैं कि चुनाव केवल सांसद बनाने का चुनाव नहीं है, चुनाव भारत का संविधान बचाने का चुनाव है। हमारा संविधान कहता है अनुसूचित जाति को 21 प्रतिशत आरक्षण होगा, पिछड़ी जाति को 27 प्रतिशत आरक्षण होगा। भाजपा सरकार ने उसकी धज्जियाँ उड़ा दी हैं। अंबेडकर नगर में 18 थाने हैं जिनमें एक भी पिछड़े वर्ग का प्रभारी नहीं है एक अनुसूचित वर्ग का प्रभारी है।वे कहते हैं,बीजेपी वाले संविधान को खघ्त्म करना चाहते हैं। रितेश पांडेय कहते हैं, सपा प्रत्याशी संविधान संशोधन का भ्रामक प्रचार कर रहे हैं।इनके पास मुद्दे नहीं हैं, इनकी सरकार में भ्रष्टाचार हुए, दंगे हुए, कानून व्यवस्था चौपट रही।इनके पास जनता को बताने के लिए कुछ नहीं। अकबरपुर के रूपेश त्रिपाठी शिक्षक हैं।वे लड़ाई सपा और भाजपा के बीच ही मानते हैं। प्रत्याशी लालजी वर्मा पिछले 25 सालों से यहां राजनीति में हैं।सपा के पक्ष में यादव,मुसलमान और कुर्मी वर्ग के होने से सपा का पक्ष मजबूत है, लेकिन सवर्ण और युवा वर्ग भाजपा के साथ दिखाई दे रहा है।अंबेडकर नगर में सपा और भाजपा दोनों प्रत्याशी बहुत मजबूती से लड़ रहे हैं, बसपा के लिए इस चुनाव में कुछ नहीं है। समाजवादी पार्टी प्रत्याशी लालजी वर्मा कहते हैं,इस बार का चुनाव जनता खुद्द लड़ रही है। मैं 44 साल से राजनीति मे हूँ जिसकी वजह से जनता का समर्थन मुझे मिल रहा है। बसपा लड़ाई से बाहर है।मुझे पूरा विश्वास है कि बसपा का 80 प्रतिशत वोट समाजवादी पार्टी को मिलेगा।लालजी वर्मा को 2021 में बसपा से निकाल दिया गया था, इस बारे में पूछे जाने पर वे कहते हैं, मैं हमेशा बसपा का अनुशासित सिपाही रहा,पार्टी अनुशासन के अनुरूप काम किया, 2021 में जिला पंचायत चुनाव में बड़ी संख्या में सदस्यों के चुनाव हारने का जिम्मेदार मुझे और रामअचल राजभर को माना गया जबकि उस समय मैं कोरोना से पीड़ित होकर कई दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहा।

वर्मा का कहना है कि भाजपा ने उन्हें बुलाया था लेकिन वे श्वैचारिक मतभेदश के कारण नहीं गए, इसके बाद श्समर्थकों के सुझाव परश सपा में शामिल हो गए।लालजी वर्मा 1991 में जनता दल के टिकट पर पहली बार विधायक बने थे।लालजी वर्मा चार बार टांडा से और दो बार कटेहरी से विधानसभा चुनाव जीते।मायावती सरकार में तीन बार मंत्री रहे, एक बार राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार और दो बार कैबिनेट मंत्री।इस चुनाव में राम मंदिर मुद्दा तो है लेकिन संविधान बदले जाने का मुद्दा कही भारी न पड़ जाए। बसपा के उम्मीदवार कघ्मर हयात कहते हैं, अंबेडकर नगर में दलित वर्ग के चार लाख से ज्यादा वोटर हैं, मुसलमान वर्ग के वोटरों की संख्या भी साढ़े तीन लाख के करीब है।इसी समीकरण को ध्यान में रखते हुए बहन जी ने मुझे का यहाँ उम्मीदवार बनाया है। अंबेडकर नगर क्षेत्र में विधानसभा की पाँच सीटें हैं इनमें चार विधानसभा सीटेंअकबरपुर, कटेहरी, टांडा और जलालपुर अंबेडकर नगर जिले में हैं जबकि गोसाईगंज विधानसभा क्षेत्र अयोध्या जिले का हिस्सा है।अंबेडकर नगर लोकसभा के पाँचों विधानसभा क्षेत्रों पर 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा ने अपना कब्जा जमाया था।फरवरी में राज्यसभा चुनाव में गोसाईगंज के विधायक अभय सिंह और जलालपुर के विधायक राकेश पांडेय ने भाजपा के पक्ष में क्रॉस वोटिंग की थी।गोसाईगंज के सपा विधायक अभय सिंह खुलकर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में चुनाव प्रचार कर रहे हैं लेकिन जलालपुर विधायक राकेश पांडेय खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं।अंबेडकर नगर लोकसभा में लगभग साढ़े 18 लाख मतदाता हैं। सबसे ज्यादा अनुसूचित जाति के मतदाता हैं जिनकी संख्या चार लाख के करीब है, मुसलमान वोटरों की संख्या साढ़े तीन लाख के करीब है।कुर्मी पौने दो लाख, ब्राह्मण सवा लाख, ठाकुर एक लाख, यादव पौने दो लाख और बाकी अन्य ओबीसी जातियाँ हैं। 2014 में मोदी लहर में पहली बार भाजपा ने यहां से जीत हासिल की और हरिओम पांडेय सांसद बने, 2019 में बसपा के टिकट पर रितेश पांडेय ने जीत हासिल की। मायावती का अंबेडकर नगर से गहरा जुड़ाव रहा है, वे अंबेडकर नगर से पहले अकबरपुर लोकसभा, सुरक्षित सीट 1998, 1999 और 2004 में लोकसभा का चुनाव लड़ीं और जीत दर्ज की।

शहर समता विचार मंच (महिला) कानपुर इकाई की मई माह की काव्यगोष्ठी सम्पन्न

कानपुर। शहर समता विचार मंच महिला गोष्ठी कानपुर इकाई की महिला काव्य गोष्ठी सीमा वर्णिका व श्रद्धा श्रीवास्तव के

संयोजन में तथा रेखा श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई ।इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि सुषमा सिंह श्उर्मिश एवं विशिष्ट अतिथि सुषमा त्रिपाठी तथा सुनीता गुप्ता रहीं।

यह काव्य गोष्ठी दोपहर 12रू30 बजे से 2रू00 बजे तक चली जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रही रेखा श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती की मूर्ति में माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति सौम्या शर्मा द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन श्रद्धा श्रीवास्तव ने किया। इस काव्य गोष्ठी में रेखा श्रीवास्तव, डॉ सुषमा त्रिपाठी,सुषमा सिंह उर्मि, योगिता सिंह, सौम्या शर्मा, सुनीता गुप्ता, श्रद्धा श्रीवास्तव तथा सीमा वर्णिका ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चाँद लगा दियें । अध्यक्षीय सम्बोधन के बाद धन्यवाद ज्ञापन कानपुर इकाई की जिलाध्यक्ष सीमा वर्णिका ने किया ।

कवि–रंगकर्मी एवं चित्रकार का संगम

प्रयागराज।जाने–माने रंगकर्मी–रंग–निर्देशक एवं नाट्य–लेखक शैलेश श्रीवास्तव के काला–डांडा स्थित आवास पर वरिष्ठ कवि डा□योगेन्द्र कुमार मिश्र षविश्वबन्धुष एवं शम्भूनाथ श्रीवास्तव ष्शम्भुष तथा अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त चित्रकार रवीन्द्र कुशवाहा का समागम हुआ।विषय था अनौपचारिक बैठक में रंगकर्म–चित्रकला तथा कविता पर विचार–विमर्श करना तथा कविता पाठ।अपने–अपने अनुभवों को साझा करते हुए कलाकार

की सरलता–सहजता के बीच उसकी दुर्गम कला यात्रा पर चर्चा हुई और एक ठोस कार्य करने का संकल्प लिया।योगेन्द्र ने गरीबी और बेबसी को चित्रित करती हुई अपने शिक्षाकाल की रचना ष्सड़क के एक किनारे।सूखे नीम के सहारे।एक चर्मकार बैठा।पतला कि जैसे सैंटा(सरकंडा)।बीड़ी पी रहा था।जूता भी सी रहा था।तभी आया विचार यह मन में।इतनी लू और तपन में।यह जूता सिल रहा है या अपनी किस्मत को सिल रहा है।ष सुनाकर एक प्रश्न पूरे समाज–देश के सामने खड़ा कर दिया।शम्भूनाथ ने शायरी पेश की कि तुमने जो मुंह से फूंककर शमा बुझा दिया। हसरत भरे परवाने का अरमां मिटा दिया।। सुनाकर सोचने को मजबूर कर दिया कहा कि ऐसी बैठकें रचनात्मकता के लिए खाद–पानी का काम करती हैं।रवीन्द्र ने कला को स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य टानिक की संज्ञा से नवाजा और अपनी कविता साथ चाहिए को सुनाते हुए कहा कि धड़कन को एक श्वांस चाहिए, मित्रता को विश्वास चाहिए। जीने को एक आस चाहिए चिंतन को आध्यात्म चाहिए। थिरकन को एक पांव चाहिए, चित्रण को एक भाव चाहिए। बिम्बों को आकार चाहिए, स्वप्नों को साकार चाहिए पर खूब तालियां बटोरी। शैलेश ने सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए अंत में आभार प्रकट किया।

बेरोजगार हूं,

बेरोजगार हूं,
काम चाहता हूं।
उम्र आधी बीती,
अब बिल्कुल नहीं,
आराम चाहता हूं।

बेरोजगार हूं,
काम चाहता हूं।

हैं मेरे भी ये सपने,
कुछ बन जाऊं मैं।
ज्यादा की नहीं हसरत,
थोडी तो शोहरत
पाऊं मैं।
डरता हूं मैं अब,
लोगों के तानों से।
दुनियावी उसूलों,
और पैमानों से।
कहीं बिखघ्र न जाऊं मैं।
कुछ गलत न कर
जाऊं मैं।

अब होना नहीं बिल्कुल,
बदनाम चाहता हूं।
बेरोजगार हूं,
काम चाहता हूं।

हरीश निषाद,
सदियापुर, इलाहाबाद

चार दशक बाद मिला न्याय

प्रतापगढ। न्यायालय का चक्कर लगाकर थक चुके न्याय की आस में एक पीढ़ी खो चुके परिवार को आज अपर जिला जज माननीय बाबूराम जी ने उसके पक्ष में अपना फैसला सुनाया स

बताते चलें कि पीड़ित पक्ष के आत्मा राम त्रिपाठी भृगुराज त्रिपाठी आशाराम गत 45वर्षों से अपने पूर्वजों की धरती पर अपने अधिकार में नहीं ले सके उनके पड़ोसी कब्जेदार दीनानाथ त्रिपाठी ने वादकारियों की जमीन पर 45वर्षों से कब्जा कर रखा था जिसमें सिविल अपील में तारीख दर तारीख सुनवाई करते हुए आज अपर जिला जज ने आदेश दिया कि निर्णय की तारीख से दो माह के अंदर विवादित भूमि से अपना कब्जा हटाकर वादी को कब्जा दे दें सऐसा न करने पर अपीलार्थी गण को न्यायालय के माध्यम से कब्जा प्राप्त करने का अधिकार होगास वादी की तरफ से अधिवक्ता धीरेन्द्र कुमार तिवारी,देव, एवम उच्च न्यायालय लखनऊ खंडपीठ के सीनियर अधिवक्ता रोहित त्रिपाठी जी के द्वारा न्याय के लिए पैरवी की गई समामला सदर तहसील के अन्तर्गत मौजा खजूरनीं के सडारी गांव का पीड़ित पक्ष के चेहरों पे खिली मुस्कान।

संक्षिप्त

चीन के अभ्यास के दूसरे दिन ताइवान ने अपने तट के पास दर्जनों युद्धक विमान और नौसैन्य जहाज देखे

ताइवान ने कहा कि उसके तट के पास चीन की सेना के व्यापक अभ्यास के दूसरे दिन शुक्रवार को दर्जनों चीनी युद्धक विमान और नौसैन्य पोत देखे गए। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसे 49 युद्धक विमान और 19 नौसैन्य पोत के साथ–साथ चीनी तट रक्षक जहाजों का भी पता चला है और बृहस्पतिवार से शुक्रवार तक 24 घंटे की अवधि में 35 विमानों ने ताइवान जलडमरूमध्य में उड़ान भरी। यह दोनों पक्षों के बीच की

वास्तविक सीमा है। ताइवान के नए राष्ट्रपति लाई चिंग–ते ने बृहस्पतिवार को राजधानी ताइपे के दक्षिण में ताओयुआन में एक समुद्री अड्डे का दौरा किया और नाविकों तथा शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों से कहा, ''हम बाहरी चुनौतियों और खतरों का सामना कर रहे हैं। हम स्वतंत्रता और लोकतंत्र के मूल्यों को बनाए रखेंगे।''अ इससे पहले लाई ने सोमवार को अपने उद्घाटन भाषण में कहा था कि ताइवान ''एक स्वतंत्र संप्रभु राष्ट्र है जिसमें संप्रभुता लोगों के हाथों में है।'' उन्होंने साथ ही बीजिंग से अपनी सैन्य धमकी को रोकने को कहा था। वहीं चीन की सेना ने कहा कि ताइवान के आसपास उसका दो दिवसीय अभ्यास स्वतंत्रता चाहने वाली अलगाववादी ताकतों के लिए सजा के समान है। चीन में ताइवान मामलों के कार्यालय के प्रवक्ता चेन बिनहुआ ने बृहस्पतिवार रात एक बयान में कहा, ''ताइवान के नेता ने पदभार संभालते ही एक–चीन सिद्धांत को चुनौती दी...।'' 'एक–चीन सिद्धांत' के अनुसार चीन केवल एक देश है और कम्युनिस्ट पार्टी के शासन के तहत ताइवान भी चीन का ही हिस्सा है। चीन का मानना है कि ताइवान को मुख्य भूमि के साथ जोड़ा जाना चाहिए भले ही इसके लिए बल प्रयोग करना पड़े।

मोटरसाइकिल की 'नंबर प्लेट' में हेरफेर करने के मामले में सिंगापुर में भारतीय मूल की महिला को जेल

भारतीय मूल की एक मलेशियाई महिला को अक्टूबर 2019 से फरवरी 2020 के बीच अवैध पार्किंग से जुड़े पांच मामलों और 'इलेक्ट्रॉनिक रोड प्राइसिंग' (ईआरपी) संबंधी 14 मामलों में सिंगापुर में तीन सप्ताह जेल की सजा सुनाई गई है। दीवानई करुणानिधि (28) ने सड़क–कर संग्रह के मकसद से यातायात की निगरानी के लिए यहां सड़कों पर स्थापित ईआरपी प्रणाली के तहत लगाए जाने वाले सड़क उपयोग शुल्क से बचने के लिए अपनी एक मोटरसाइकिल की लाइसेंस प्लेट में बदलाव किया था। 'चौनल न्यूज एशिया' ने अपनी एक रिपोर्ट में बृहस्पतिवार को बताया कि यह पहला मामला है जिसमें भूमि परिवहन प्राधिकरण (एलटीए) ने गैरकानूनी गतिविधियों का पता लगने से बचने के लिए गलत लाइसेंस प्लेट वाले विदेशी पंजीकृत वाहन का उपयोग करने के मामले में किसी व्यक्ति पर आरोप लगाया है। खबर में बताया गया है कि बृहस्पतिवार को मिले अदालती दस्तावेजों के अनुसार करुणानिधि को 10 मई को सजा सुनाई गई। एलटीए के अभियोजक डेरेन टोह ने दस्तावेज में बताया कि करुणानिधि का अपराध 21 फरवरी 2020 को उस समय सामने आया जब एक एलटीए अधिकारी ने 'सेंट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट' में बेफ्रंट एवेन्यू के पास खड़ी उसकी मोटरसाइकिल के आगे और पीछे की लाइसेंस प्लेट पर अलग–अलग नंबर देखे।

हसीना के जाल में कैसे फंसा बांग्लादेशी सांसद ? प्रोफेशनल कसाई को कोर्ट में किया गया पेश

बांग्लादेश के सांसद अनवारुल अजीम अनवर की कथित तौर पर हत्या से पहले उन्हें हनी ट्रैप में फंसाने के लिए जिस महिला का इस्तेमाल किया गया था, उसे ढाका में हिरासत में लिया गया है। बांग्लादेश पुलिस सूत्रों ने बताया कि शिलंती रहमान नाम की महिला बांग्लादेशी नागरिक है और मुख्य आरोपी अख्तरुज्जमां शाहीन की प्रेमिका है। पुलिस ने कहा कि , जांच से संकेत मिला कि बांग्लादेशी सांसद एक महिला द्वारा बिछाए गए हनी ट्रैप में फंस गए, जो सांसद के दोस्त की भी करीबी थी। आरोपी कसाई जेहाद हवलादार को पुलिस ने कोर्ट में पेश कर दिया है। वो हत्या के लिए बांग्लादेश से बुलाया गया था। दो महीने से मुंबई में छिप कर रह रहा था।

5 करोड़ की सुपारी

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि उनके दोस्तों में से एक ने उनकी (सांसद) हत्या के लिए लगभग पांच करोड़ रुपये की सुपारी दी थी। अधिकारी ने कहा कि अवामी लीग के सांसद के दोस्त के पास कोलकाता में एक फ्लैट है और वह संभवतरू इस समय अमेरिका में है। पुलिस अधिकारियों ने यह भी कहा कि कोलकाता के न्यू टाउन इलाके के जिस फ्लैट में बांग्लादेश के सांसद को आखिरी बार प्रवेश करते देखा गया था, उसे उसके मालिक ने अपने दोस्त को किराये पर दिया था। इस फ्लैट का मालिक उत्पाद शुल्क विभाग का कर्मचारी है।

8 दिनों तक गुमशुदगी बनी रही पहेली

8 दिनों तक बांग्लादेशी संसद की गुमशुदगी एक मिस्ट्री बनी हुई थी। अब उनकी हत्या कमिस्ट्री बन गई है। 56 साल के बांग्लादेशी सांसद अनवारुल अजीम 12 मई को कोलकाता आए थे। वो एक कान से सुन नहीं पाते थे और उसी का इलाज करवाने भारत आए थे। कब कोलकाता में वह अपने मित्र गोपाल विश्वास के घर में रह रहे थे। 13 मई को सांसद डॉक्टर के पास जाने की बात कह कर दोस्त के घर से निकले थे। 13 में की शाम को सांसद ने अपने दोस्त को व्हाट्सएप मैसेज करके बताया कि वो दिल्ली जा रहे

हैं। 15 मई को सांसद अजीम ने अपने दोस्त गोपाल विश्वास को व्हाट्सएप मैसेज किया कि वह दिल्ली पहुंच गए और वीआईपी लोगों के साथ है। इसलिए उन्हें फोन न किया जाए। 17 मई को सांसद अजीम के परिवार ने बांग्लादेश से विश्वास को फोन कर बताया कि अनवारुल का फोन बंद आ रहा है। इसके बाद कोलकाता पुलिस ने फोन की लोकेशन बिहार के मुजफ्फरपुर में ट्रैक की। कोलकाता में उनके हत्या की खबर आई है। तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

ट्रम्प के गुप्त धन का फैसला 2024 के चुनाव को कैसे कर सकता है प्रभावित ?

दोषी करार दिए जाने या नहीं दोनों के अपने–अपने इफेक्ट नजर आएंगे

संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में किसी भी पूर्व राष्ट्रपति के पहले आपराधिक मुकदमे की सुनवाई करने वाली जूरी के सदस्य अगले सप्ताह डोनाल्ड ट्रम्प के गुप्त धन मामले में अपना फैसला सुना सकते हैं। ऐसे में इस मुकदमे और उसके आने वाले नतीजे का राष्ट्रपति चुनाव पर असर पड़ने की काफी संभावना है। ट्रायल के समापन के करीब पहुंचने के साथ ही अब इसके रिजल्ट पर लोगों की निगाहें टिकी है। इस फैसले से ट्रंप के प्रेसिडेंट इलेक्शन कैंपेन पर भी सीधा असर पड़ सकता है।

हश मनी केस

डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिकी इतिहास में पहले पूर्व राष्ट्रपति हैं जिन पर चार अलग–अलग आपराधिक मामले चल रहे हैं। साल 2017 में पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स ने मीडिया के सामने आकर कहा था कि साल 2006 में डोनाल्ड ट्रंप और उनके बीच अफेयर था। इस बात की भनक ट्रंप की टीम को लग गई थी। उनके वकील माइकल कोहेन ने स्टॉर्मी डेनियल्स को चुप रहने के लिए 1 लाख 30 हजार डॉलर का भुगतान किया था। डेनियल्स को पैसे का भुगतान करना अवैध

नहीं था, बल्कि ये जिस माध्यम से किया गया था वो अवैध था। ट्रंप के वकील ने गुपचुप तरीके से ये डेनियल्स को दी थी। मुकदमे के साथ–साथ ट्रम्प पर रोक के आदेश ने उन्हें हाल के हफ्तों में चुनावी कैंपेन से इतर अदालत में अधिक समय बिताने के लिए मजबूर किया है। ट्रम्प के खिलाफ आरोपों में व्यापार रिकॉर्ड में हेराफेरी करने के 34 मामले शामिल हैं, जो न्यूयॉर्क कानून के तहत एक गंभीर अपराध है। आरोप है कि कथित यौन संबंध का खुलासा करने से रोकने के लिए डेनियल्स को किए गए भुगतान को छुपाने के लिए इन रिकॉर्डों में हेराफेरी की गई। हालांकि इससे ट्रम्प इनकार करते हैं।

दोषी करार दिए जाने पर क्या

अगर ट्रंप दोषी पाए गए तो नतीजे गंभीर हो सकते हैं। जनमत सर्वेक्षणों से संकेत मिलता है कि दोषी फैसला मतदाताओं के एक बड़े हिस्से को ट्रम्प का समर्थन करने से रोक सकता है। अप्रैल रॉयटर्स/इप्सोस पोल के अनुसार, चार में से एक रिपब्लिकन ने कहा कि अगर ट्रम्प को आपराधिक मुकदमे में दोषी पाया जाता है तो वे उन्हें वोट नहीं देंगे, जबकि 60 प्रतिशत निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी यही भावना व्यक्त की है। हालाँकि, कुछ रिपब्लिकन रणनीतिकारों का तर्क है कि डेमोक्रेटिक अभियोजक द्वारा अपरीक्षित कानूनी रणनीतियों के साथ लाए गए न्यूयॉर्क मामले की प्रकृति, ट्रम्प और उनके समर्थकों को एक पक्षपातपूर्ण हमले के रूप में दोषी फैसले को तैयार करने की अनुमति दे सकती है।

'दोषी नहीं' फैसले का प्रभाव

बरी होना संभवतः ट्रम्प के लिए एक महत्वपूर्ण जीत होगी। राजनीतिक उत्पीड़न के उनके दावों को मजबूत करेगी। अभियान के दौरान, ट्रम्प वाशिंगटन, जॉर्जिया और फ्लोरिडा में अपने ऊपर लगे अन्य आपराधिक आरोपों के खिलाफ अपने बचाव को मजबूत करने के लिए दोषी न होने के फैसले का उपयोग कर सकते हैं। राजनीतिक सलाहकारों का मानना घ्है कि बरी होने से ट्रम्प की बेगुनाही की कहानी मान्य होगी और उनके मुख्य समर्थकों को ऊर्जा मिलेगी।

त्रिशंकु जूरी होने पर क्या?

जूरी सर्वसम्मत फैसले पर नहीं पहुंच पाती है, जिसके परिणामस्वरूप त्रिशंकु जूरी बनती है, तो न्यायाधीश गलत मुकदमे की घोषणा कर देगा। हालाँकि ट्रम्प इसे आंशिक जीत के रूप में पेश कर सकते हैं, लेकिन इसमें बरी होने की स्पष्ट पुष्टि का अभाव है। गलत मुकदमे से पता चलता है कि कम से कम कुछ जूरी सदस्यों का मानना है कि ट्रम्प दोषी थे, जिससे उनके अभियान पर संदेह की छाया बनी रही।

जहरीली गैस के रिसाव से भारतीय की मौत, पहचान नहीं की गयी जाहिर

सिंगापुर मैंटैंक की नियमित सफाई करते समय जहरीली गैस का रिसाव होने से बृहस्पतिवार को 40 वर्षीय एक भारतीय नागरिक की मौत हो गई। द स्ट्रेट्स टाइम्स की खबर के अनुसार मारे गए भारतीय नागरिक की पहचान जाहिर नहीं की गयी है। खबर के मुताबिक वह 24 से 40 वर्ष की आयु के उन तीन लोगों में से एक था जो पूर्वाह्न 11 बजकर करीब 15 मिनट पर जलकल एजेंसी के चोआ चू कांग कार्यशाला में बेहोश पाए गए थे। खबर के मुताबिक तीनों को बेहोशी की हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां एक कर्मी की मौत हो गई। पब्लिक यूटिलिटीज बोर्ड (पीयूबी) ने एक बयान में कहा कि दो अन्य कर्मचारी एनजी टेंग फोंग जनरल अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई में भर्ती हैं। मानवबल मंत्रालय (एमओएम) ने एक बयान में बताया कि दोनों व्यक्तियों की उम्र क्रमशरू24 और 39 वर्ष है और वे मलेशियाई हैं एवं सामान्य कर्मचारी के रूप में कार्यरत थे। मंत्रालय के प्रवक्ता के हवाले से समाचार एजेंसी ने बताया कि भारतीय नागरिक को सुपरसोनिक मेंटेनेंस सर्विसेज ने सफाई संचालन प्रबंधक के रूप में नियुक्त किया था।

पापुआ न्यू गिनी में भूस्खलन से 100 से अधिक लोगों की मौतः ऑस्ट्रेलियाई मीडिया

ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्प (एबीसी) ने बताया कि सुदूर पापुआ न्यू गिनी में शुक्रवार को हुए भूस्खलन में 100 से अधिक लोगों के मारे जाने का अनुमान है। एबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, भूस्खलन की घटना कथित तौर पर दक्षिण प्रशांत द्वीपीय देश की राजधानी पोर्ट मोरेस्बी से लगभग 600 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में एंगा प्रांत के काओकलाम गांव में घटी। यह हादसा स्थानीय

समयानुसार तड़के 3 बजे करीब हुआ। इलाके के निवासियों का कहना है कि मृतकों की संख्या 100 से अधिक भी हो सकती है। हालांकि अधिकारियों ने इस आंकड़े की पुष्टि नहीं की है। सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में स्थानीय लोग भूस्खलन के बाद दबे हुए शवों को बाहर निकालते हुए देखे जा सकते हैं।

यूएई ने सुपरस्टार रजनीकांत को `गोल्डन वीज़ा' से किया सम्मानित किया, आखिर इतना खास क्यों होता है यह वीज़ा

सिनेमा और संस्कृति में रजनीकांत के योगदान की एक महत्वपूर्ण मान्यता में, प्रसिद्ध अभिनेता रजनीकांत को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) द्वारा सम्मानित गोल्डन वीजा प्रदान किया गया है। सुपरस्टार हाल ही में अबू धाबी में थे। उन्होंने यूएई सरकार के संस्कृति और पर्यटन विभाग को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि वह प्रतिष्ठित वीजा पाकर श्सम्मानितश महसूस कर रहे हैं। अनुभवी अभिनेता ने वीजा सुरक्षित करने में मदद करने के लिए अपने मित्र और लुलु समूह के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एमए यूसुफ अली के प्रति भी आभार व्यक्त किया। रजनीकांत ने कहा "मैं अबू धाबी सरकार से प्रतिष्ठित यूएई गोल्डन वीजा प्राप्त करके बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। रजनीकांत ने कहा, श्इस वीजा की सुविधा देने और सभी सहयोग के लिए मैं अबू धाबी सरकार और मेरे अच्छे दोस्त लुलु ग्रुप के सीएमडी श्री यूसुफ अली को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।श्

इस गोल्डन वीज़ा में ऐसा क्या खास है? इसके लिए कौन पात्र है? आओ हम इसे नज़दीक से देखें।

यूएई का गोल्डन वीज़ा क्या है?

आकर्षक कार्य वीजा, नागरिकता के अवसर और न्यूनतम वित्तीय प्रतिबद्धताओं के साथ प्रत्यक्ष रियल एस्टेट निवेश की मांग करने वाली दुनिया भर की शीर्ष प्रतिभाओं, शिक्षाविदों और व्यवसायों की बढ़ती मांग के जवाब में, संयुक्त अरब अमीरात सरकार ने अपनी वीजा नीतियों में एक महत्वपूर्ण बदलाव शुरू किया है। केवल अस्थायी प्रवासी श्रम पर निर्भर रहने से दूर जाने की आवश्यकता को पहचानते हुए, संयुक्त अरब अमीरात ने वैश्विक प्रतिभा और निवेशकों को आकर्षित करने और बनाए रखने और वैश्विक व्यापार और प्रतिभा केंद्र के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने का लक्ष्य रखा है। रणनीतिक बदलाव की परिणति 2019 में गोल्डन वीज़ा की शुरुआत के साथ हुई। दीर्घकालिक यूएई निवास के लिए टिकट के रूप में क्या माना जा सकता है, गोल्डन वीज़ा निवेशकों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, असाधारण छात्रों और स्नातकों, मानवतावादी नेताओं और फ्रंटलाइन नायकों सहित विभिन्न श्रेणियों में समृद्ध और कुशल व्यक्तियों को दिया जाता है।

संयुक्त अरब अमीरात के सात अमीरातोंरू

अबू धाबी, अजमान, दुबई, फुजैराह, रास अल खैमा, शारजाह और उम्म अल क्वैन में लंबे समय तक रहने का अवसर देता है, बल्कि स्वास्थ्य देखभाल, काम और अध्ययन तक पहुंच भी प्रदान करता है। विशिष्ट विशेषाधिकारों की एक श्रृंखला का आनंद लेते हुए देश। यह उन्हें निवास वीज़ा के लिए परिवार के सदस्यों को प्रायोजित करने की क्षमता भी देता है, जिसमें पति–पत्नी और बच्चे भी शामिल हैं, भले ही उनकी उम्र कुछ भी हो। इसके

अलावा, गोल्डन वीज़ा कार्यक्रम निवेशकों को प्रायोजक या स्थानीय मेज़बान की आवश्यकता को समाप्त करते हुए, सार्वजनिक उद्यमों में निवेश करके 10–वर्षीय स्व–प्रायोजित रेजीडेंसी परमिट सुरक्षित करने का विकल्प प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण न केवल निवेशकों के लिए प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है बल्कि यूएई की अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष निवेश को भी प्रोत्साहित करता है, जो बड़े पैमाने पर तेल निर्भरता को कम करने और प्रौद्योगिकी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों को बड़ा बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है।

गोल्डन वीज़ा के लिए कौन पात्र है?

रियल एस्टेट निवेशकरू पांच साल का गोल्डन वीजा दिया जा सकता है। किसी के पास संयुक्त अरब अमीरात में कम से कम 2 मिलियन दिरहम (4.52 करोड़ रुपये) की संपत्ति होनी चाहिए या विशिष्ट अनुमोदित स्थानीय बैंकों से ऋण का उपयोग करके संपत्ति खरीदनी चाहिए। इस वीज़ा के लिए प्रायोजक की आवश्यकता नहीं होती है। बिजनेस इनक्यूबेटररू उद्यमियों को इस शर्त पर पांच साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है कि उनके पास कम से कम 500,000 दिरहम (1.13 करोड़ रुपये) की तकनीकी या अभिनव आर्थिक परियोजना हो, जिसके लिए संयुक्त अरब अमीरात स्थित लेखा परीक्षक, संबंधित अधिकारियों और एक मान्यता प्राप्त संयुक्त अरब अमीरात से समर्थन प्राप्त हो। सार्वजनिक निवेश निवेशकरू प्रायोजक के बिना 10 साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है, शर्त यह है कि निवेशकों को या तो एक मान्यता प्राप्त संयुक्त अरब अमीरात निवेश कोष में एईडी दो मिलियन जमा करना होगा, कम से कम एईडी दो मिलियन पूंजी वाला व्यवसाय होना चाहिए, या कम से कम एईडी का भुगतान करना होगा। सालाना सरकारी करों में 250,000 (56 लाख रुपये)। इसके अलावा, उनके पास पूरी तरह से निवेशित पूंजी होनी चाहिए (उधार नहीं दी गई) और उनके पास अपने और अपने परिवार के लिए चिकित्सा बीमा होना चाहिए।

डॉक्टर और वैज्ञानिकः 10 साल का गोल्डन वीजा दिया जा सकता है। उन्हें संयुक्त अरब अमीरात के स्वास्थ्य और रोकथाम मंत्रालय से अनुमोदन और उपयुक्त वैज्ञानिक परिषदों से अनुशंसा पत्र की आवश्यकता है।

आविष्कारकः 10 साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है। उनके पास अर्थव्यवस्था मंत्रालय का एक अनुशंसा पत्र होना चाहिए जो यह पुष्टि करता हो कि पेटेंट संयुक्त अरब अमीरात की अर्थव्यवस्था में मूल्य जोड़ता है।

संस्कृति और कला में रचनात्मक लोगों को 10 साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है। उन्हें संयुक्त अरब अमीरात के संस्कृति और कला विभाग से अनुमोदन पत्र की आवश्यकता है।

कार्यकारी निदेशकः 10 साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है। उनके पास प्रासंगिक विश्वविद्यालय की डिग्री, एक ही पद पर कम से कम पांच साल का अनुभव और कम से कम AED 50,000 (11.31 लाख रुपये) का वेतन होना चाहिए।

एथलीटः 10 साल का गोल्डन वीजा दिया जा सकता है। किसी के पास यूएई जनरल स्पोर्ट्स अथॉरिटी या खेल परिषदों से एक सिफारिश पत्र होना चाहिए।

इंजीनियरिंग और विज्ञान के विशेषज्ञः 10 साल का गोल्डन वीजा दिया जा सकता है। किसी के पास प्रासंगिक प्रमाणित स्नातक और मास्टर डिग्री और एक कार्य अनुबंध होना चाहिए।

उत्कृष्ट छात्रः पांच साल का गोल्डन वीज़ा दिया जा सकता है। हाई स्कूल के छात्र और उच्च ग्रेड (कम से कम 95 प्रतिशत) वाले राष्ट्रीय टॉपर, और मान्यता प्राप्त संस्थानों से उच्च जीपीए वाले विश्वविद्यालय के छात्र पात्र हैं।

अमेरिका में एक और इंसान में बर्ड फ्लू की पुष्टि, मिशिगन स्वास्थ्य विभाग ने लोगों को किया सचेत

मार्च के अंत में डेयरी मवेशियों में पहली बार वायरस का पता चलने के बाद से अमेरिका में बर्ड फ्लू के दूसरे मानव मामले की पुष्टि की गई है। मिशिगन में एक डेयरी कर्मचारी के संक्रमण से उस वायरस का प्रकोप बढ़ गया है जो वर्षों से पोल्ट्री में फैल रहा है, हालांकि यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने कहा कि जनता के लिए जोखिम कम है। सीडीसी ने एक कॉल पर संवाददाताओं से कहा कि उसने बर्ड फ्लू के मानव से मानव में संचरण का कोई सबूत नहीं देखा है और उसने मार्च से अब तक करीब 40 लोगों का परीक्षण किया है, जिसमें मिशिगन कार्यकर्ता भी शामिल है। सीडीसी ने कहा कि जिन लोगों का परीक्षण किया गया वे सभी डेयरी फार्म से जुड़े थे या उनके संपर्क में थे। अप्रैल में टेक्सास के एक डेयरी कर्मचारी के संक्रमित होने की पुष्टि हुई थी। मिशिगन और टेक्सास उन नौ राज्यों में शामिल हैं, जिन्होंने डेयरी झुंडों में बर्ड फ्लू की सूचना दी है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।